Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ओ३म्

प्रायः जनता का
प्रतिनिधि मासिक

जन ज्ञान

वर्ष १ | अमर शहीद श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज | अंक ७

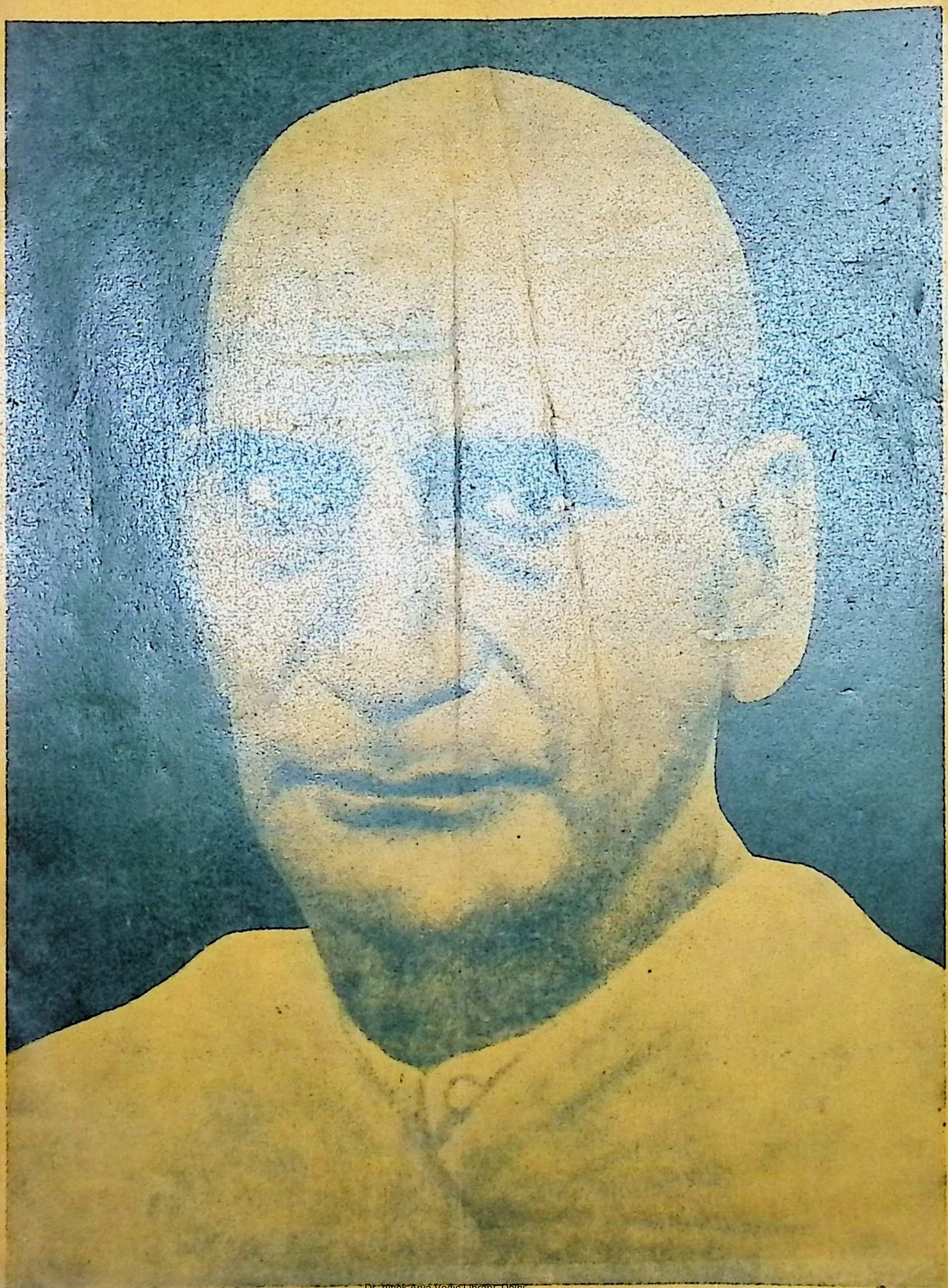

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्य जगत् के गौरव-विद्वान—

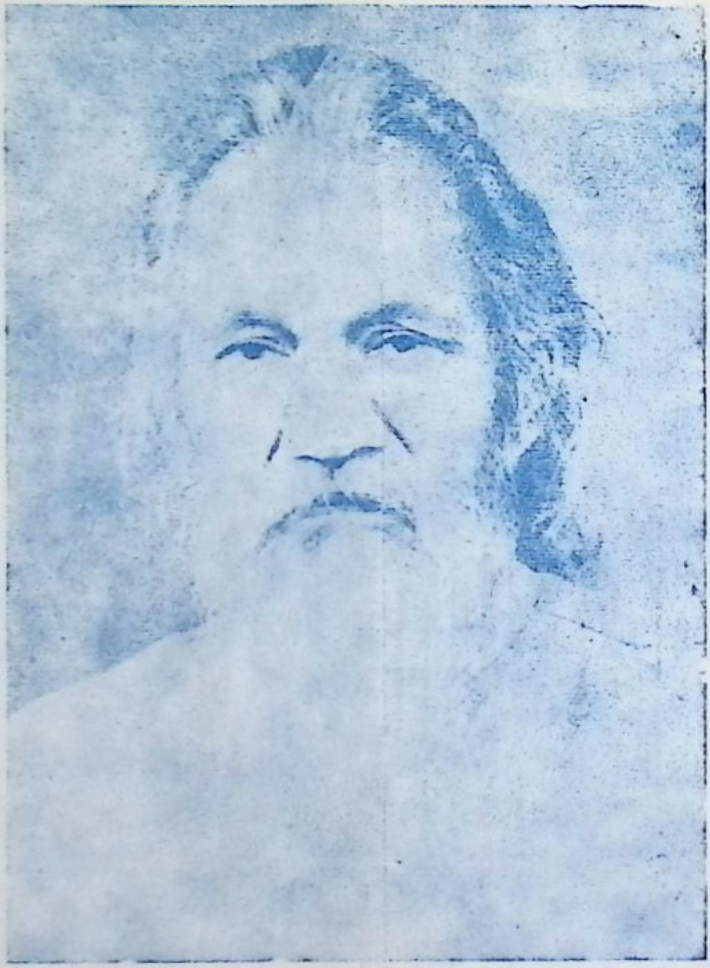

स्व० पं० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञास

आप ने जीवन भर आर्य शिक्षा प्रणाली प्रसार और वेद-ज्योति प्रचारहित कार्य किया। जन-ज्ञान ऐसे दिव्य पुरुषों के चरण चिन्हों पर चलकर उनके प्रति सादर श्रद्धांजलि अर्पित करता है —संपादक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हमारा संकल्प

वेद-धर्म की अमर पताका, धरती पर लहरायेंगे ।
मानवता की अमृतवाणी, सब तक हम पहुँचायेंगे ।।
दयानन्द के सैनिक हैं हम, आगे बढ़ते जायेंगे ।
पाखंडों के गढ़ दुर्गम सब, चूर-चूर कर आयेंगे ।।

युग बदला है, बदल रही है, आज मनुज की तरुणाई ।
सत्य कांपता खड़ा द्वार पर, पशुता की है बन आई ।।
वीरों ने अंगड़ाई ली है, ध्वजा न झुकने पायेगी ।
धर्म-न्याय की विजय पताका, लहर-लहर लहरायेगी ।।

यह दयानन्द के दिव्यस्वप्न, साकार बनाने की वेला ।
अमर शहीदों की बलि का है, मोल चुकाने की वेला ।।
एक ओर है पाप, एक ओर है पुण्य, पुण्य की लाज बचाओ ।
बलि जाकर भी "वेद ध्वजा" का गौरव, उठो ! गुंजाओ ।।

—राकेशरानी—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन-ज्ञान के पत्रों से

कुंवर सुखलाल आर्य मुसाफिर का आशीर्वाद

"जन-ज्ञान" नामक मासिक पत्रिका श्री० भारतेन्द्रनाथ साहित्यालंकार के संरक्षण तथा निर्देशन में दिल्ली से प्रकाशित होनी प्रारम्भ हुई है। उसका "महर्षि-दयानन्द-श्रद्धांजलि विशेषांक" पढ़ कर बड़ा हर्ष हुआ। मुझे आशा ही नहीं पूरा विश्वास है कि यह पत्रिका आर्य जनता को नया जीवन प्रदान करेगी। वैदिकधर्म के प्रचार और महर्षि दयानन्द के महान् मिशन की पूर्ति के लिये ऐसी पत्रिकायें बहुत उपयोगी और आवश्यक हैं- आर्य जनता को तन-मन और धन से इसे हार्दिक सहयोग और सहायता देनी चाहिये। मैं पत्रिका की सफलता के लिए शुभ कामना करता हूँ—

—सुखलाल आर्य मुसाफिर

उन्नति कामना

आदरणीय महोदय !

"आर्योदय" तो समाप्त ही हो गया। केन्द्र के नेता चुप्पी साधे बैठे हैं। आपके हृदय में जो टीस उठती है यदि सारे देश में आप जैसा एक सौ महापुरुष त्याग और धैर्य को रखते हुए वैदिक-सन्देश को गुंजायमान करने का संकल्प लें तो वह दिन दूर नहीं जब महर्षि का नारा 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' सार्थक हो जाय।

'जन-ज्ञान' का ग्राहक बन चुका हूँ। बिहार प्रदेश में भी प्रचार होना आवश्यक है इस पर ध्यान देगें। आपकी लेखनी में जो शक्ति है उससे जन कल्याण ही होगा। 'जन-ज्ञान' सचमुच में आर्य जगत का अनूठा पत्र है। मैं एक क्षुद्र सेवक इसकी उत्तरोत्तर उन्नति चाहता हूँ।

रामशरण लाल

मान्यवर !

'जन-ज्ञान' के ३ अंक प्राप्त हुए। आपने जन-मानस को सद्विचारों से उद्वेलित करने का जो साहस पूर्ण पग उठाया है वह आप सरीखे पुरुष का ही पुरुषार्थ है। पत्रिका वास्तव में 'यथा नाम तथा गुण' को चरितार्थ करती है। भगवान आपका लक्ष्य पूरा करें।

—रमाकान्त दीक्षित

भिवानी एम० ए०

'जन-ज्ञान' का अगला दिसम्बर अंक 'नवयुग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द' अंक होगा। मूल्य १)। सदस्यों को बिना मूल्य मिलेगा। सं०

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

भारतेन्द्रनाथ साहित्यालंकार
के संरक्षण-निर्देशन में
प्रकाशित

धरती के प्रत्येक मानव के हृदय मन्दिर पर वेद ज्ञान की पावन पताका फहराने के लिए कृत संकल्प

आर्य जनता का
अपना
प्रतिनिधि प्रकाशन

जन-ज्ञान

मासिक

१५९७ हरध्यानसिंह रोड
करोलबाग नई दिल्ली-५

सम्पादक
—राकेश रानी—

वार्षिक मूल्य ६)
एक प्रति ५० पैसे

विज्ञापन दरें
प्रति पृष्ठ १००)
आवरण का द्वितीय व चतुर्थ पृष्ठ, २००)
आवरण का तृतीय पृ० १५०)

वैदिक प्रार्थना

हे प्रभु !

**ओ३म् तन्त्वा शोचिष्ठ दीदिवः
सुम्नाय नूनमोमहे सखिभ्यः ।
स नो बोधि श्रुधी
हवमुरुष्याणोऽघायतः समस्मात ॥**

यजु० ३-२६

हे अत्यन्त शुद्ध स्वरूप, स्वयं प्रकाशमान आनन्द देनेवाले जगदीश्वर हम लोग वा अपने मित्रों के सुख के लिए आपसे याचना करते हैं, तथा जो आप हमको अच्छी प्रकार विज्ञान को देते हैं, सो आप हमारे सुननें-सुनाने योग्य स्तुति समूह यज्ञ को कृपा करके श्रवण कीजिए। और हमको सब प्रकार पाप चरणों से अर्थात् दूसरे को पीड़ा करने रूप पापों से अलग रखिए—

—महर्षि दयानन्द

हे शुद्ध रूप ज्योतिर्मय भगवान्,
करो कृपा हे सब विधि कृपा निधान,
प्राणिमात्र को दो प्रभु, सच्चा ज्ञान,
सुखकारी हो, खोजपूर्ण विज्ञान,

अधर्म-पाप ना रह पाए अवशेष,
जन-जन में हो व्याप्त धर्म आदेश,
असत्य गरल का कर दो प्रभु संहार,
मिट जाए धरती से हाहाकार !

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हम यह कहना चाहते हैं

उपाध्याय जी

आर्य समाज का संदेश अपनी विद्वत्ता-पूर्ण लेखनी से लाखों व्यक्तियों के मन-मस्तिष्क तक पहुँचाने वाले श्रद्धेय श्री पं० गंगा प्रसाद जी उपाध्याय के देहान्त का समाचार मिला, तो ऐसा लगा कि हमारा एक स्तम्भ ढह गया।

उन्होंने अपने जीवन में अन्तिम स्वांस तक लेखनी द्वारा जो स्तुत्य सेवा आर्य समाज की की है वह आने वाली पीढ़ी के लिए प्रकाश स्तम्भ का कार्य देगी !

वस्तुतः आज आवश्यकता इसी बात की है कि श्रद्धेय उपाध्यायजी के जीवन-पथ का अनुगमन कर अपनी सम्पूर्ण शक्ति हम साहित्य-प्रसार में लगाएं। 'जन-ज्ञान' दिवंगत के चरणों में सादर श्रद्धांजलि अर्पित कर उनकी राह को प्रशस्त कर उस पर बढ़ते चलने के लिए कृत संकल्प है।

बधाई ! मध्य प्रदेश को भी

भारत को ईसालैंड बनाने का देश द्रोह पूर्ण षडयन्त्र-चक्र जिस तीव्रगति से सफलता पूर्वक चल रहा है, देश की स्वाभिनी जनता उससे प्रायः अपरिचित है।

शासन जानकर भी अनजान बन देश की स्वतन्त्रता और गौरव को समाप्त करने में सहायक हो रहा है।

ऐसे में मध्य प्रदेश सरकार द्वारा, नाबालिगों, महिलाओं व आदिवासियों तथा अनुसूचित जातियों व अन्य पिछड़ी जातियों पर किसी प्रकार का दबाव डालकर, या उन्हें प्रलोभन या धोखा देकर उनका धर्म परिवर्तन कराना, प्रतिबंधित कर दिया जाना, एक उचित और सराहनीय पग है।

मध्य प्रदेश विधान सभा द्वारा स्वीकृत इस विधेयक के अनुसार ऐसा कार्य करने पर २ वर्ष की सजा और १० हजार रु० तक अर्थदन्ड दिया जा सकता है।

नियोगी कमीशन की रिपोर्ट के आधार पर पारित इस विधेयक से मध्य प्रदेश में विदेशी पादरियों की गतिविधि पर अंकुश लगाने में बहुत सहायता मिलेगी।

हम मध्य प्रदेश शासन को बधाई देते हैं। उड़ीसा सरकार इसी प्रकार का नियम पहले ही बना चुकी है। आवश्यकता यह है कि भारत को ईसाइयों के घातक षड़-यन्त्रों से मुक्ति दिलाने के लिए सभी प्रांत इसी प्रकार के नियम शीघ्र से शीघ्र बनाएं।

हड़ताल या सर्वनाश

१६ सितम्बर को राष्ट्र व्यापी हड़-ताल का आयोजन कम्यूनिस्ट और उनके समर्थक विचारों के मजदूर नेताओं द्वारा हुआ। हड़ताल २० प्रतिशत सफल और ८० प्रतिशत असफल रही।

चिन्ता का विषय यह है कि आज देश में ऐसा वर्ग भी पैदा हो गया है जो 'भारत' को अपना घर नहीं समझता। जिसे देश से कोई लगाव नहीं। अन्यथा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कौन मूर्ख-पागल ऐसा होगा जो स्वयं अपने हाथों अपने घर में आग लगाने की चेष्टा करे।

हड़ताल के दिन हम यही अनुभव कर रहे थे कि देश में एक वर्ग ऐसा तैयार हो चुका है जिसमें से देश को अपना समझने की भावना लुप्त हो चुकी है। उसकी बला से चाहे सब कुछ जल जाए, नष्ट हो जाए।

यह भावना देश प्रेम की नहीं, द्रोह की है यह कहने में हम संकोच नहीं करना चाहते। इसलिए जो व्यक्ति भारत देश को अपना घर ससझते हैं उन्हें यह सोचना ही चाहिए कि जो उनके घर को जलाने की सोचते हैं उनसे क्या व्यवहार किया जाए।

भविष्य निर्माण और इतिहास की स्वर्णिम कथा लिखने के इच्छुक व्यक्तियों को अब सर्वस्व दांव पर लगा कर भी अपने देश को, घर को जलने से बचाने के लिए जो कुछ भी वह कर सकते हों करना चाहिए।

अन्यथा हड़तालें-सर्वनाश का लक्षण, फैलेंगी और सब कुछ समाप्त हो जाएगा, फिर नींद खुली भी तो क्या लाभ ?

हमारी प्रगति

६ मास के अल्प जीवन में 'जन-ज्ञान' की प्रगति आशा जनक है। आर्य जनता का संरक्षण पाकर 'जन-ज्ञान' घुटने चलने की स्थिति में आ गया है। अब तक हम ३ ट्रैक्ट और २ विशेषांक भेंट कर चुके हैं। हमें विश्वास है कि 'जन-ज्ञान' के सदस्य दो विशेषांक और ४ साधारण अंक पाकर सन्तुष्ट होंगे।

दिसम्बर में हम महर्षि का जीवन-चरित्र भेंट कर रहे हैं। भविष्य में क्या करेंगे···यह कहना आज कठिन है क्योंकि जनता का जितना-जितना सहयोग हमें मिलता जाएगा···उतना-उतना ही आगे हम बढ़ते जाएंगे।

हमारी प्रार्थना आप सभी से केवल यह है कि यदि आप हमारे लक्ष्य-भाव से सहमत हैं तो अपना स्नेह-आशीर्वाद हमें दीजिए। आर्य जनता का प्यार ही तो हमारी वह शक्ति है जिसके बल पर हम महर्षि दयानन्द की विजय पताका धरती के प्रत्येक मानस पर फहराने चाहते हैं।

आदर्श अभियान

कलकत्ता के प्रो० श्यामराव आधुनिक सुखसुविधामय जीवन छोड़ तपस्वी-साधक बन दिल्ली-हरयाणा क्षेत्र में आए। उन्होंने अपना जीवन महर्षि के चरणों में अर्पित किया। वस्तुतः धन्य है उनका त्याग और अनुकरणीय है उनकी भावना।

आर्ययुवक परिषद के तत्वाविधान में उन्होंने अनेक रचनात्मक अभियान भिवानी आर्यसमाज में केन्द्र बनाकर आरम्भ किए हैं। पिछले दिनों कुरुक्षेत्र से दिल्ली तक २०० के लगभग आर्यवीरों के साथ शराब बन्दी आदि के विरुद्ध उन्होंने पदयात्रा की। जन-जागरण की दिशा में आर्य समाज का पथ-पदर्शक अभियान था यह।

वस्तुतः आज जिस क्रान्ति की आवश्यकता है उसके अंकुर श्यामराव जैसे युवक द्वारा उभरे हैं। त्याग-बलिदान का उज्वल आदर्श और सर्वस्व समर्पण का मार्ग ही हमें विजय दे सकेगा। हमरी शुभकामनाएं और समस्त मंगल भाव वीर युवकों के साथ हैं।

प्रभु कृपा करें कि दयानन्द के सैनिकों की यह टुकड़ी विशाल सेना का रूप धारण कर मानव जाति को अज्ञान-अन्याय-अभाव से छुटकारा दिला सके।

—भारतेन्द्रनाथ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

श्रद्धेय महात्मा आनन्द स्वामी जी द्वारा
अफ्रीका में वेद प्रचार की धूम
प्रचार का विवरण पूज्य महात्मा जी द्वारा भेजे पत्र में पढ़िए

मेरे प्यारे श्री भारतेन्द्रनाथ जी,

सप्रेम नमस्ते !

मुझे अफ्रीका में आए हुए दो मास से अधिक हो गये। मैं केन्या के नगरों नैरोबी और मोम्बासा में वेदकथा करने के पश्चात् टांगानिया के उत्तरीय भाग में श्री पं० दिलीप जी वेदालंकार एम० ए० के साथ धर्मप्रचारार्थ भ्रमण करता रहा हूं। दारेसलाम—झांझीबार,—टांगा—मोशी—अरुशा—म्बाझा—टबोरा में वेद संदेश सुनाता रहा हूँ। इस भ्रमण में महत्व की बात तो यह है कि इस बार मुझे अफ्रीका की मसाई जाति में आर्यसमाज का वेद सन्देश सुनाने का अवसर मिल गया। अरुशा से १०० मील की दूरी पर 'लेक मन्यारा' के निकट मसाई लोगों का भारी जमघट था। एक दुभाषिये के द्वारा मैंने उनसे मानवता-हिन्दूत्व और वेद की बातें सुनाई। एक मसाई से जो बातचीत हुई वह संक्षेप से लिखता हूं। मैंने अफ्रीका की इस बहादुर जाति के एक व्यक्ति से पूछा—"क्या तुमने वेद का नाम सुना है!" (मसाई)—'नहीं'

मैं—क्या स्वामी दयानन्द का नाम सुना है ?

मसाई—नहीं।

मैं—क्या भगवान राम और कृष्ण का नाम सुना है ?

मसाई—नहीं।

मैं—क्या महात्मा गांधी का नाम सुना है ?

मसाई—हाँ।

मैं—वेद वह ज्ञान है जो परमात्मा ने संसारके सब लोगों के कल्याण के लिए सृष्टि के आरंभ में दिया, परन्तु प्रमाद के कारण लोग वेद को भूल गए। और इस कलिकाल में स्वामी दयानन्द ने लोगों को फिर वेदसंदेश सुनाया। महात्मा गाँधी ने स्वामी दयानन्द से प्रेरणा लेकर ही भारत को आजाद कराया, छूतछात को मिटाया और भ्रातृभाव बढ़ाया।

मसाई—क्या दयानन्द की कोई पुस्तक साहित्यिक भाषा में मिलती है ?

मैं—सूफी दयानन्द (SUFI DAYA NAND) के नाम से एक पुस्तक साहित्यिक में मिलती है।

इसके पश्चात् मैंने अफ्रीका के इन मसाई लोगों को बताया कि वेद में जहाँ प्रभुभक्ति-देशभक्ति और विज्ञान की बातें लिखी हैं वहाँ यह भी आदेश वेद ने दिया है "श्रमेण तपसा सृष्टा" यह सृष्टि भरसक परिश्रम और तप करने के लिए रची गई है। और टांगानिया का "अरुशा डिक्लेरेशन" वेद की इस बात का

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

समर्थन देता है कि घोर परिश्रमद्वारा देश का उत्थान करो । अतः मेरे मसाई भाईओं ! शराब पीना बन्द करो और खेती-बाड़ी करके देश को समृद्ध करो ।

दूसरी महत्वपूर्ण बात यह हुई कि टबोरा में लगभग ९ मील की दूरी पर 'किपाला पाला' नामक बड़ा भारी मिशन और पुस्तकालय है, वहाँ हर पाँच वर्ष में अफ्रीकन देशों के लिए १०० मिशनरी तैयार होते हैं उनका प्रशिक्षण "स्वाहिलि" भाषा में होता है। वहाँ के पुस्तकालय को देखा, जिसमें सहस्रों ग्रन्थ ईसाई एवं मुस्लिम धर्म के सम्बन्ध में हैं। मैंने वहाँ के प्रबन्धक फ़ादर से पूछा कि क्या कोई ग्रन्थ हिन्दू धर्म के सम्बन्ध में है ?

उन्होंने प्रत्युतर दिया कि हिन्दू धर्म के साथ हमारा कोई वास्ता नहीं पड़ता। हम तो अफ्रीकन मुस्लिमों को ईसाई बनाने में लगे हुए हैं। और हिन्दू धर्म की फिलोसॉफी इतनी जटिल है कि हम उसे समझ भी नहीं पा सकते। मैंने प्रार्थना की कि आप कुछ पुस्तक तो मंगवाकर रखें। फादर के पूछने पर मैंने इन पुस्तकों के नाम और पते लिखा दिए।

(१) सामवेद—आंग्ल भाषा भाष्य (पं० घर्मदेव जी)
(२) यजुर्वेद—आंग्ला भाषा भाष्य (पं० देवीचन्द जी)
(३) सत्यार्थ प्रकाश—(आंग्ल भाषा) (पं० गंगा प्रसाद)
(४) स्वामी दयानन्द चरित्र (हरविलास शारदा)
(५) The Arya Samaj- (लाला लाजपतराय)
(६) ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका (स्वामी दयानन्द)

इसी प्रकार के ईसाई मिशन स्थान-स्थान पर बने हुए हैं, और ऐसा प्रतीत होता है कि ईसाईयत अफ्रीका पर छा जाएगी।

तीसरी महत्वपूर्ण बात सुनकर आप और भी प्रसन्न होंगे कि टबोरा में श्री० पं० दिलीप जी वेदालंकार, एम० ए० ने हिन्दू-मुस्लिम और ईसाईयों में इस सुन्दर रीति से वेदप्रचार किया कि वहाँ के ईसाई और मुस्लिम भी प्रभावित हो गए।

टबोरा आर्यसमाज का उत्सव ७ सितम्बर से १५ सितम्बर तक सम्पन्न हुआ। मैं टबोरा १२ सितम्बर को पहुँच गया वहाँ 'गायत्री महायज्ञ' आर्यसमाज मंदिर में होता रहा जिसमें लोग बड़ी श्रद्धा-भक्ति से भाग लेते रहे। टबोरा में एक अच्छा मुस्लिम परिवार है जो बड़ा धनी एवं धार्मिक है। पं० दिलीप जी ने इस मुस्लिम परिवार पर वेद का एवं यज्ञ का ऐसा महत्व प्रकट किया कि श्री मुभफ्फर अहमद और उनकी पत्नी श्रीमती नसीम बानों को विधिपूर्वक यज्ञोपवीत देकर यजमान के रूप में यज्ञ में बिठाया। इस परिवार ने बड़ी श्रद्धा से यज्ञ एवं वेदकथा में अन्ततक भाग लिया और आर्यसमाज का अनन्य भक्त बन गया।

इसी टबोरा नगर के जेलखाने में भी मैं पहुँचा और कैदियों से बातचीत की। जेल के अफ्रीकन सुप्रिन्डेन्ट मेरी बातों से प्रभावित हुआ और अगले दिन सपत्नी समाज मंदिर में मुझे मिलने आए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अंगरेज ने अपने राज्य में अफ्रीकनों को शराब की बुरी लत लगा दी है। मैंने जब शराब की बुराई इस अफ्रीकन (जेलर) को बताई तब उसने शराब नहीं पीने का व्रत लिया। इसी प्रकार उसकी अफ्रीका के जिस भाग में अब के मुझे वेद संदेश सुनाने का अवसर मिला—इससे पूर्व नहीं मिला था।

दारेसलाम
२५.६. ६८

यह सारा प्रदेश लगभग गुजराती भाषा-भाषी है। और उनमें श्रद्धा भक्ति विशेष हैं। दारेसलाम में 'योग साधना शिविर' भी लगाया गया जिसमें ४५ स्त्री-पुरुषों ने भाग लिया, इन साधकों की प्रबल इच्छा है कि मैं पुनः लम्बे समय के लिए यहां आकर के फिर शिविर लगाकर उन्हें ध्यानावस्थित होने की विधि बताऊँ।

आपका
—आनन्द स्वामी सरस्वती

आवश्यकता

आर्य कुमार अर्न्तभारती गुरुकुल इन्द्रपुरी म० प्र० के लिये एक संस्कृत अध्यापक जो प्राचीन प्रणाली से पढ़ा सके, शीघ्र आवश्यकता है। गुरुकुल झज्जर, एटा, चितौड़ के स्नातक को अग्र-मान्यता दी जायेगी। निर्व्यसनी, आर्य विचारों में दृढ़ता जरूरी है। पौराणिक आवेदन नहीं करें।

पता— **आर्यानन्द सरस्वती**
रंगवासा
पो० राऊ जि० इंदौर संचालक
(म० प्र०)

वर की आवश्यकता

—१६ वर्षीय स्वस्थ, सुन्दर, ब्राह्मण आर्य परिवार श्री बी० ए० की छात्रा कन्या के लिए दृढ़ आर्ज वर की आवश्यकता है। जाति का कोई बंधन नहीं। विवाह अत्यन्त सादगी और विशुद्ध वैदिक रीति से होगा। दहेज आदि के इच्छुक कृपा न करें—

c/o जन-ज्ञान
—२६२—
१५६७ हरध्यानसिंह रोड
नई दिल्ली-५

धार्मिक परीक्षायें

भारतवर्षीय वैदिक सिद्धान्त परिषद् की सिद्धान्त प्रवेश, सि० विशारद् सि० भूषण सिद्धान्तालंकार, सि० शास्त्री तथा सिद्धान्ताचार्य परीक्षायें हिन्दी माध्यम से आगामी दिसम्बर जनवरी में समस्त तथा विदेशों में होंगी। सर्वप्रथम् द्वितीय आने वालों को छात्रवृत्ति दी जाती है। उत्तीर्ण होने पर सुन्दर, तिरंगा प्रमाण पत्र दिया जाता है। अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की सत्यार्थ सुधारक सत्यार्थ मार्तण्ड उपाधियों डाक द्वारा निःशुल्क प्राप्त करें। विशेष जानकारी के लिये १५ पैसे के डाक-टिकट भेजिये।

अदित्य ब्रह्मचारी
यशपाल शर्मा
प्रधान
—आचार्य मित्रसेन एम० ए०
सिद्धांतालंकार
परीक्षा मंत्री
भारतवर्षीय वैदिक सिद्धान्त
परिषद सदन सेवा कटरा
—अलीगढ़

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—श्रुतिशील शर्मा

वेद कालीन विमान शास्त्र

वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है, इसीलिए इनमें सभी तरह के ज्ञानों का समावेश है। वेदों में यज्ञ द्वारा वृष्टि विज्ञान का वर्णन भी बहुत बड़े पैमाने पर हुआ है। आवश्यकतानुसार पानी बरसाने और पानी बन्द कर देने की विद्या भी वेदों में है। इस विद्या से हमारे प्राचीन ऋषि मुनि परिचित थे। यही कारण है कि उस समय अतिवृष्टि और अनावृष्टि के कारण देश में दुर्भिक्ष का डर लोगों को नहीं था। आज भी इन्दौर निवासी श्री पं० वीरसेन जी वेदश्रमी यज्ञ द्वारा जल-वर्षण की विद्या में अनुसंधान कर रहे हैं। और उनका दावा है कि उन्होंने इसके अन्तर्गत कई रहस्यों का पता भी लगा लिया है।

इसी प्रकार के शास्त्रों में विमान-शास्त्र भी एक है। आज का संसार विमान के आविष्कार का श्रेय राइट बन्धुओं को देता है। पर एक वेद का अध्ययन करने वाला जानता है कि आज के विमान कोई सर्वथा नवीन आविष्कार नहीं हैं। ऋग्वेद में अश्विनी कुमार के सूक्तों में जगह-जगह इन विमानों का वर्णन आया है। अश्विनी कुमारी के रथ उड़ने वाले और वे पंखों के सहारे उड़ते थे। "हे अश्विनी ! जब आपका रथ पक्षियों के समान आकाश में उड़ता है, तब आपके घोड़े अन्तरिक्ष में जाते हैं।"

(ऋ० १।४६।३)

"हे अश्विनी ! आपके रथ में शीघ्र-गामी पक्षी जोड़े गए है, वे (श्येन) पक्षी आपको इधर ले आवें।"

(ऋ० १।११८।४)

अश्विनी कुमारों के पास उड़ने वाली नावें भी थीं—

"हे अश्विनी ! तुमने तुग्रपुत्र के लिए अपने सामर्थ्य से पंखयुक्त नौका महासागर में बसाई, वह पक्षी के समान थी। उस नौका से उड़ने वाले तुम दोनों सहज ही से समुद्र के पार उड़कर चले गए।" (ऋ० १। १२८)

यह नौका जल में तो चलती ही थी पर आकाश में भी उड़ती थी।

आज इस वैज्ञानिक युग में भी ऐसे विमान देखने या सुनने में नहीं आते जो तीन दिन और तीन रात तक बिना कहीं रुके लगातार उड़ान भर सकें। पर ऐसे विमान वैदिककाल में थे, इसी प्रकार ऋग्वेद १।११७।१४; १।११६।५; १।११६ ४; ६।६२।६; ७।६९।७ में भी के हवाई जहाजों का उल्लेख है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्राचीन विमान शास्त्रों के ग्रन्थों में "भारद्वाज विमान शास्त्र" नामक ग्रंथ विशेष उल्लेखनीय है। वह आज उपलब्ध है। हस्तलिखित ग्रंथों के आधार पर उसका सम्पादन प्रसिद्ध आर्य विद्वान् परिव्राजक स्वामी ब्रह्ममुनि ने किया और सार्वदेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ है।

पारे से चलने वाले विमान

उसमें अनेक तरह के विमानों का उल्लेख है। साथ ही उनको बनाने का ढंग भी बताया है। कठिनाई है सिर्फ उनमें बताए गए पारिभाषिक शब्दों को समझने की उसमें एक ऐसे आश्चर्यजनक विमान का भी वर्णन है जो पारे से चलता था। वह पारा भी जलकर फिर पारा ही बन जाता था, अर्थात् विमान के उड़ते समय जो पारा जलता था, वह जला हुआ भाग किसी विशेष यन्त्र द्वारा फिर पारा बना दिया जाता था। इस प्रकार उस विमान में एक बार पारा भर दिए जाने पर फिर पारा भरने की जरूरत नहीं होती थी।

राइट बंधुओं से ३ वर्ष पूर्व उड़ान

आज सारा संसार राईट बन्धुओं को विमान के आविष्कर्ता के रूप में जानता और मानता है। राईट बन्धुओं के विमान ने अपनी सबसे पहली उड़ान सन् १८९८ में भरी थी। पर यह कम ही लोगों को मालूम होगा कि उससे भी पहले सन् १८९५ में एक विमान ने उड़ान भरी थी और उसकी उड़ान सफल भी रही। उस विमान का नाम 'मरुत्सखा" था और उस विमान के आविष्कर्ता थे बम्बई स्थित सर जे० जे० स्कूल आफ आर्टस के एक शिक्षक श्री शिवकर बापू जी तलपदे। ये एक महाराष्ट्रीय सज्जन थे। उनके बारे में पूना से निकलने वाले मराठी दैनिक "केसरी" के २ सितम्बर, १९६२ के अंक में डा० वि० भा० गोवंडे ने एक छोटा सा लेख लिखा था, उसका अक्षरशः अनुवाद यहां दिया जा रहा है।

प्राचीन भारतीय साहित्य और विज्ञान में जो अनुपम भंडार निहित है उसकी खोज कौन करे? पश्चिम का मुख देख चलने वाले व्यक्तियों से आशा नहीं। काश कि भारत का सोया स्वाभिमान जागता और हम समझते कि भारत कभी जगद्गुरु था और एक बार फिर हम उसे विश्व का प्रकाश-स्तंभ बनाने का व्रत लेते···काश कि···

"मैं ७४ वर्ष का हूं और बम्बई में ४० वर्ष रहने के कारण बम्बई के बारे में बहुत कुछ जानता हूं। एक संशोधन के दौरान मैंने रायल एशियाटिक सोसायटी और मराठी ग्रन्थ संग्रहालय के अनेक ग्रंथ पढ़ डाले हैं। सरकारी रेकार्ड्स और टाइम्स जैसे अखबारों की पुरानी फाइलें भी मैंने पढ़ डाली हैं। बम्बई के इतिहास बताने वाले कई ग्रन्थ भी मैंने पढ़ डाले हैं। इन सबको बताने में मेरा हेतु यह है कि इतनी जानकारी होते हुए भी बम्बई में घटित एक बहुत महत्वपूर्ण घटना मुझसे अज्ञात ही रही। यह एक आश्चर्य ही है।"

"वह घटना क्या है, यह बताने से

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पहले मैं यह बता देना आवश्यक समझता हूं कि वह घटना मुझे मालूम कैसे हुई। बम्बई और पूना में ब्रिटिश कौंसिल के दो ग्रंथालय हैं। पूना स्थित ग्रंथालय से पिछले सप्ताह 'हिन्दु स्किप्चर्स' नामक एक ग्रंथ मेरे देखने में आया।

वासदेव बिसून दोयाल

ग्रंथकार का यह नाम विचित्र सा है पर यह विष्णुदयाल का अपभ्रंश है ऐसा मेरा विचार है। लेखक मारिशस द्वीप में रहते हैं। पहले इस द्वीप में पैदा होने वाली शक्कर बहुत परिणाम में हमारे देश में आती थी। वह द्वीप फ्रांस का एक उपनिवेश था, पर अब वह स्वतन्त्र है। श्रीदयाल की शिक्षा भारत में हुई है। वे कलकत्ता विश्वविद्यालय से एम० ए० हैं। सुप्रसिद्ध डा० मुखर्जी के पास रह कर उन्होंने संस्कृत और वैदिक वाङ्मय का गहन अध्ययन किया है। इसी कारण हिन्दू संस्कृति का उन्हें अभिमान है।

प्रोफेसर दयाल के लेख "हिबर्ट जर्नल" और "कौण्टम्परेरी" इन सम्मानित पत्रिकाओं में प्रकाशित होते हैं। "एनसाइक्लोपीडिया अमेरिकाना" नामक एक बृहत्काय ग्रंथ में हिन्दू धर्म की जानकारी देने वाला प्रो० दयाल का एक लेख भी प्रसिद्ध हुआ है। प्रो० दयाल के "हिन्दु स्किप्चर्स" ग्रंथ को मैकमिलन कम्पनी ने प्रकाशित किया है।

उपरोक्त ग्रंथ के पृष्ठ ३० पर "आधुनिक भारतीय के द्वारा निर्मित विमान" इस शीर्षक के अन्तर्गत एक घटना दी हुई है—

"१९५२ में मैंने जब एक भारतीय के द्वारा विमान बनाने की बात सुनी, तो मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। "आब्जर्वर" नामक समाचार-पत्र के ६ अक्तूबर, १९५२ के अंक में मुझे निम्न जानकारी प्राप्त हुई:—

विमान तैयार करने वाले सज्जन महाराष्ट्रीय थे। उनका नाम शिवकर बापू जी तलपदे था और बम्बई के चिरा बाजार में डुक्करवाडी नामक स्थान पर रहते थे। संस्कृत भाषा विषयक उनका अध्ययन बहुत गहन था। वैदिक ग्रंथों का उन्होंने मनन किया था। वे एक महान वैज्ञानिक थे और सर जे० जे० स्कूल ऑफ आर्ट्स में शिक्षक थे।

वैदिक मन्त्रों के आधार पर तलपदे

वह प्रभु!

मूर्धा दिवो नाभिरग्निः पृथिव्या अथाभवदरती रोदस्योः
तस्या देवासो अजनयंत देवम् वैश्वानर ज्योतिरिदार्याय

ऋग्वेद १ मण्डल-५९ सूक्त-२ मन्त्र

जिस प्रकार वह भगवान दिव्य शक्तियों में मूर्धन्य है, पृथ्वी पर बसने वालों का आशा-केन्द्र है, अपनी शक्ति से प्रकाशित, और जड़-चेतन दोनों का धारण करने वाला है—उसीको सब विद्वान् अपनी वाणी द्वारा प्रकाशित करते हैं—वही विश्व भर के नर का हितकारी है इसलिए वह वैश्वानर है। वह संसार भर के श्रेष्ठ पुरुषों के लिए ज्योतिःस्तम्भ है—हम भी उसी से प्रकाश ग्रहण करें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ने एक विमान तैयार किया था। बम्बई के आर्ट सोसायटी के टाउन हॉल में एक प्रदर्शनी में श्री तलपदे का विमान भी रखा गया था। लोगों ने विमान की बड़ी प्रशंसा की।

लोगों के द्वारा विमान की प्रशंसा सुनकर उन्होंने अपना अनुसन्धान जारी रखा। पारे के दबाव से विमान आकाश में उड़ सकता है या नहीं यह उनके अनुसन्धान का विषय था। विमान की रचना का विवरण "भारद्वाज संहिता" और ऋग्वेद के १०/१६० में मिलता है। इस मन्त्र में बताया है कि सूर्य की किरणें उड़ानों के दौरान विमानों में शक्ति भरती हैं। [आज भी सोलार बैटरी वाले स्पुतनिकों से बेतार के सन्देश भेजे जाते हैं।] सूर्य किरण और पारे से शक्ति प्राप्त करने में तलपदे पूर्णतया यशस्वी हुए। तलपदे की पत्नी भी विदुषी थीं। उनकी और एक इंजिनियर की सहायता भी तलपदे को प्राप्त थी।

आठ जाति के विमान

वैदिक ग्रंथों में पुष्कर आदि आठ जाति के विमान बताए गए हैं, [आज भी बोइंग, सिडले, हॉकर, बांबर, मिग, नेट, इत्यादि विमान सुनने में आते हैं।] वैदिक काल में विमान बिजली से चलते थे। श्री तलपदे ने अपने विमान का नाम "मरुत्सखा" रखा था।

"तलपदे का विमान तैयार हो जाने पर सन् १८९५ में चौपाटी पर विमान को उन्होंने लोगों के सामने उड़ाया। उड़ान भरते हुए विमान को देखने वालों में बड़ौदा के महाराज सय्याजी राव गायकवाड़, न्यायमूर्त्ति महादेव गोविन्द रानाडे और सेठ लालाजी नारायणजी भी थे। इन बड़े लोगों ने १५०० फीट की ऊंचाई तक जाकर फिर उसी जगह पर सुरक्षित रूप से वापस आए हुए विमान को देखकर श्री तलपदे की बड़ी प्रशंसा की और उनको बहुत सी आर्थिक सहायता भी प्रदान की।

श्री तलपदे का दुःखद अवसान

दुर्भाग्य से श्री तलपदे का कुटुम्ब अकाल ही कालवश हो गया, उसके साथ ही श्री तलपदे का अनुसन्धान कार्य भी समाप्त हो गया। बाद में श्री तलपदे भी मृत्युवश चले गए और उनके सम्बन्धियों ने वह विमान एक ब्रिटिश कम्पनी को बेच दिया।

उपर्युक्त घटना की सत्यता की खोज अवश्य होनी चाहिए और यदि यह घटना सत्य सिद्ध हो जाए, हो प्रथम भारतीय विमान के आविष्कारक के रूप में श्री तलपदे का महान् गौरव किया जाना चाहिए। श्री तलपदे का विमान सन् १८९५ में उड़ा था, जब कि राइट बन्धुओं का विमान सन् १८९८ में उड़ा था।"

"डॉ० वि० भा० गोविंडे केसरी दैनिक रसित ६२"

श्री गोविंडे के उपर्युक्त लेख के आधार पर इन पंक्तियों के लेखक ने भी इधर-उधर खोज की। लेखक ने इस बारे में पं० श्री दा० सातवलेकरजी से भी पूछताछ की। पंडितजी ने लेखक को बताया कि सर जे० जे० स्कूल में तलपदे श्री सातवलेकर जी के कला गुरु थे। उस समय श्री तलपदे ने एक विमान उड़ाया था, जो सफल रहा। श्री तलपदे कई बार वेदमंत्रों का अर्थ पूछने श्री सातवलेकर जी के पास भी आये थे। श्री तलपदे ने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वेदमंत्रों के आधार पर "विमान शास्त्र" नामक एक ग्रंथ भी लिखा था, जिसे पंडित जी ने जांचा और उसमें कुछ सुधार भी किए। यह ग्रंथ बाद में प्रकाशित भी हुआ। अतः श्री तलपदे को विमान का आविष्कार केवल एक गप्प नहीं माना जा सकता, वह एक तथ्य है। प्राचीन काल में विमान विद्या पर एक नहीं, अनेक ग्रंथ लिखे जा चुके हैं। कई ग्रंथों का उल्लेख तो, "यन्त्र-सर्वस्व" नामक एक ग्रंथ में ग्रंथकार ने किया है, जैसे—१—शौनकीयम् [शौनककृत] २—विमान चन्द्रिका; ३—व्योमयान तंत्रम्; ४—यंत्र कल्प; ५—व्योमयानार्क प्रकाश; ६—यान बिन्दु, ७—धातुसर्वस्वं [बोधायनकृत]; ८—लौहतत्त्वप्रकरणं; ९—सौदामिनी कला; १०—लौहरत्न प्रकरणम् (शाकटायनकृत); १३—वैश्वानरतंत्रम् (नारदकृत) १४—धूम्रप्रकरणम् (नारदकृत) १५—वाल्मीकिगणितं (वाल्मीकिकृत); लौह शास्त्रम् (शाकटायनकृत) इत्यादि लगभग ९७ ग्रंथों के नाम उस ग्रंथ में आए हैं।

इन प्राचीन ग्रंथों के आधार पर यदि अनुसन्धान किया जाए, तो अवश्य नये-नये रहस्यों का उद्घाटन हो सकता है। किन्तु क्या हमारी अपनी सरकार इधर ध्यान देगी ?

इन्द्रियग्राम

मात्रा स्वस्रा दुहित्रा वा, न विविक्तासनो भवेत्।
बलवान् इन्द्रियग्रामो, विद्वांसमपि कर्षति ॥

—मनु

अर्थ—मनुष्य को चाहिए कि माता, भगिनी तथा पुत्री के साथ भी एकान्त स्थान में निवास न करे। इन्द्रियों का दल बहुत बलवान् है। [अवसर मिलने पर] वह विद्वान् को भी खींचकर [पतन की ओर] ले जाता है।

यततो ह्यपि कौन्तेय ! पुरुषस्य विपश्चितः।
इन्द्रियाणि प्रमाथीनि, हरन्ति प्रसभं मनः ॥

—गीता

अर्थ—हे कुन्तिपुत्र अर्जुन ! इन्द्रियां बहुत अधिक बलवान् हैं, वे तो प्रयत्नशील और विचारवान् मनुष्य के मन को भी बलपूर्वक खींचकर [विषय-भोगों की ओर, पतन के मार्गों की ओर] ले ही जाती हैं।

प्रेषक—
साधु सोमतीर्थ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कवि का पत्र

'जन-ज्ञान' के दो अंक मिले (४ व ५) देखते ही हृदय खिल गया। 'आर्योदय' की ही नहीं, वरन् सारे भारत की आर्य जनता के सभी छोटे-बड़े पत्रों-पत्रिकाओं की रिक्तता निश्चय ही, इसके द्वारा पूर्ण हो सकेगी। साथ ही, कलुष-कर्दम से आपाद मस्तक परिवेष्टित, अज्ञानांधकार में भ्रान्त और किंकर्त्तव्य विमूढ़ता से सर्वथा जड़ित सामान्य समष्टि रूपेण जनता का भी उचित पथ-प्रदर्शन 'जन-ज्ञान' करेगा।

चाहिये तो यह कि 'गीताप्रेस' की ही भाँति कोई ऐसा आर्य प्रकाशन संस्थान सामने आये जो कम से कम मूल्य में वेद, उपिनषद, आरण्यक ब्राह्मण तथा उनसे सम्बद्ध निगूढ़ ज्ञान-धाराओं का शाश्वत सुधामय स्वरूप जन-चक्षुओं के सामने प्रस्तुत कर सके। पर, जब तक ऐसा न हो, तब तक यह कार्य संकेत रूप में "जन-ज्ञान" करने में समर्थ हो, यही मेरी कामना है।

प्रिय वेद की भाव-विचारवाले,
शुचि शोधभरा अभियान बना रहे।
तप, त्याग, सुकर्म की ज्योति जला,
ऋषिकाल जयी का निशान बना रहे।
भली 'त्रैत' की नींव सुपुष्ट सजे,
निज संस्कृति-सौध महान् बना रहे।
लिये संगम साध्य औ साधन का,
नवशाश्वत ही 'जन-ज्ञान' बना रहे।
मनु की महतीय परम्परा से, मति का,
मधु-कोष प्रधान बना रहे।
नव नैतिकता-परिवेश फबे,
जग भी परिवार समान बना रहे।
भले आर्य समाज के ध्येय फलें,
सगी शुद्धि का स्वस्थ विहान बना रहे।
दृढ़ लेखन दाय सहेजे हुए,
भला आयुध-सा 'जन-ज्ञान' बना रहे।

भाइयो ! बढ़े चलो !

भैरव दत्त शुक्ल

चलता सदा है अविराम काल-चक्र,
कभी ऋजु, कभी वक्र।
इसलिए, बार-बार—
कहता हूँ मैं युवकों से पुकार :
"तुम जवान हो !
बलवान हो !
ओज, शौर्य, दीप्ति से प्रदीप्त,
उत्साह-ऊष्मा से तप्त,
उमंग भरे,
ओज भरे,
तेज भरे भाइयो ! बढ़े चलो !
धैर्य भरी बहिनो ! बढ़ी चलो !
बाधाएं, अवरोध हैं अनेक,
भ्रांतियां, विरोध हैं अनेक;
पर, टेक छोड़ना निसर्ग ने सिखाया नहीं
मुख मोड़ने को संस्कृति ने कहा नहीं,
लक्ष्य भूलने की राय कभी भारत की
रही नहीं।

अवरोध रौंदते,
सीमा सारी तोड़ते,
साफल्य-सुरभित-जय-माल—
अपने गले में डाल,
होना है निहाल।
पर···ऐसा न हो कहीं :
सारी कमाई यह,
विजय की बढ़ी-सी बड़ाई यह,
यत्नपाली जय माल,
साधना-तपी वर-माल,
बेच डालो—
चन्द कागज के टुकड़ों के लालच से।
वर्षों का अर्जित ज्ञान,
सारा स्वाभिमान —
पल में ही नष्ट करो !
विचार लो !
समय अनन्त है;
(बशर्ते···उपयोग करो।)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कार्य भी न थोड़ा है,
(यदि महसूस करो !)
राशि-राशि भाव-कोष कसमसाता-
अकुलाता
कोटि-कोटि बाहुओं का झुंड एक साथ
उठा आता;
शत-शत मुख 'शतानिक' की दुहाई देते,
अनगिन वक्ष हो समक्ष अड़े जमते;
राष्ट्र की पुकार गूँज-गूँज जाती,
जननी सहम, बार-बार बिललाती;
(सुनो !···सुनो !···कान खोल,
सुनो !)
मंगल-कामना का दृढ़ अवलंब सँजो,
छवि सहानुभूति की विभूति-सी समेट
लो;
जिसमें भरी सुधा ममता-दया की भली,
ऐक्य के सुदृढ़तम ताने-बाने लिये—
सदन सजाओ सहयोग का चिरन्तन;
बल मनोयोग का समेट बाहु-बाहु
मध्य—
चिन्तन-चतुर 'देव-भाग' हथियाओ;
पर-सेवा···नहीं-नहीं···सच्ची जन-
सेवा करो;
(अपना-पराया भला आर्यता में संभव
कभी ?)
उपकार···नहीं-नहीं···कर्त्तव्य पालो
सही,
नैतिक विचार का सहारा संबल लिये
रहो !
रूपसी-सी क्षमता को लिपटाये,
चरित्र-सपूत का सदैव परिपालन करो !
सरल-सुशान्त बनो,
(केवल सुजन-हित)
क्रुद्ध-आक्रुष्ट दिखो,
(आततायी-नीचों पर)
यथायोग्य बर्तो—
यथार्थ का न साथ छोड़ो,
कल्पना की गोद पले मिथ्या आदर्श
तजो,
बाहरी चमक ही न साध्य स्वीकार
करो,
व्यर्थ ही, न भोले-भाले साधनों को
दुतकारो,
प्रकृति के न दास बनो,
(साथ पर, गहे रहो !)
आत्म-तत्व बूझो-समझो,
(उसी में 'लसो' नहीं !)
परब्रह्म को उपासो,
(पर, सत्-चित् भूलो नहीं !)
सन्तुलित 'चैत' पर ज्ञान का मिहिर उगे,
व्यवहार-खाद द्वारा कर्मठ-वृक्ष लगें बढ़ें;
सारा तम-तोम, जीर्ण जरा-आवरण न
शेष रहे;
वसुधा कुटुंब बने।
'मनुर्भव' याद रखो !
'मा भैः' न भूलो कभी !
'असतो मा सद्गमय' मूल-मंत्र बना
रहे,
'सत्यमेव जयते' खराद पर चढ़ा रहे,
'दुरितानि परासुव' प्रभु से सदैव कहो,
'यद् भद्रं तन्न आसुव' की प्रार्थना
भली-सी करो !
(पर, मुख से ही नहीं—मनसा-कर्मणा
भी !)
अमर-पुत्र बनो !
अग्निध्वज सदृश तनो !
अग्रणी सदैव रहो !
पुरोहित का दाय लहो !
तब सही आर्य होगे !
अपराजेय शिरोधार्य होगे !

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कवि का पत्र

'जन-ज्ञान' के दो अंक मिले (४ व ५) देखते ही हृदय खिल गया। 'आर्योदय' की ही नहीं, वरन् सारे भारत की आर्य जनता के सभी छोटे-बड़े पत्रों-पत्रिकाओं की रिक्तता निश्चय ही, इसके द्वारा पूर्ण हो सकेगी। साथ ही, कलुष-कर्दम से आपाद मस्तक परिवेष्टित, अज्ञानांधकार में भ्रान्त और किंकर्त्तव्य विमूढ़ता से सर्वथा जड़ित सामान्य समष्टि रूपेण जनता का भी उचित पथ-प्रदर्शन 'जन-ज्ञान' करेगा।

चाहिये तो यह कि 'गीताप्रेस' की ही भाँति कोई ऐसा आर्य प्रकाशन संस्थान सामने आये जो कम से कम मूल्य में वेद, उपिनषद, आरण्यक ब्राह्मण तथा उनसे सम्बद्ध निगूढ़ ज्ञान-धाराओं का शाश्वत सुधामय स्वरूप जन-चक्षुओं के सामने प्रस्तुत कर सके। पर, जब तक ऐसा न हो, तब तक यह कार्य संकेत रूप में "जन-ज्ञान" करने में समर्थ हो, यही मेरी कामना है।

प्रिय वेद की भाव-विचारवाले,
शुचि शोधभरा अभियान बना रहे।
तप, त्याग, सुकर्म की ज्योति जला,
ऋषिकाल जयी का निशान बना रहे।
भली 'त्रैत' की नींव सुपुष्ट सजे,
निज संस्कृति-सौध महान् बना रहे।
लिये संगम साध्य औ साधन का,
नवशाश्वत ही 'जन-ज्ञान' बना रहे।
मनु की महतीय परम्परा से, मति का,
मधु-कोष प्रधान बना रहे।
नव नैतिकता-परिवेश फबे,
जग भी परिवार समान बना रहे।
भले आर्य समाज के ध्येय फलें,
सगी शुद्धि का स्वस्थ विहान बना रहे।
दृढ़ लेखन दाय सहेजे हुए,
भला आयुध-सा 'जन-ज्ञान' बना रहे।

भाइयो ! बढ़े चलो !

भैरव दत्त शुक्ल

चलता सदा है अविराम काल-चक्र,
कभी ऋजु, कभी वक्र।
इसलिए, बार-बार—
कहता हूँ मैं युवकों से पुकार :
"तुम जवान हो !
बलवान हो !
ओज, शौर्य, दीप्ति से प्रदीप्त,
उत्साह-ऊष्मा से तप्त,
उमंग भरे,
ओज भरे,
तेज भरे भाइयो ! बढ़े चलो !
धैर्य भरी बहिनो ! बढ़ी चलो !
बाधाएं, अवरोध हैं अनेक,
भ्रांतियां, विरोध हैं अनेक;
पर, टेक छोड़ना निसर्ग ने सिखाया नहीं
मुख मोड़ने को संस्कृति ने कहा नहीं,
लक्ष्य भूलने की राय कभी भारत की
रही नहीं।

अवरोध रौंदते,
सीमा सारी तोड़ते,
साफल्य-सुरभित-जय-माल—
अपने गले में डाल,
होना है निहाल।
पर···ऐसा न हो कहीं :
सारी कमाई यह,
विजय की बढ़ी-सी बड़ाई यह,
यत्नपाली जय माल,
साधना-तपी वर-माल,
बेच डालो—
चन्द कागज के टुकड़ों के लालच से।
वर्षों का अर्जित ज्ञान,
सारा स्वाभिमान —
पल में ही नष्ट करो !
विचार लो !
समय अनन्त है;
(वशर्ते···उपयोग करो।)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कार्य भी न थोड़ा है,
(यदि महसूस करो !)
राशि-राशि भाव-कोष कसमसाता-
अकुलाता
कोटि-कोटि बाहुओं का झुंड एक साथ
उठा आता;
शत-शत मुख 'शतानिक' की दुहाई देते,
अनगिन वक्ष हो समक्ष अड़े जमते;
राष्ट्र की पुकार गूँज-गूँज जाती,
जननी सहम, बार-बार बिललाती;
(सुनो !···सुनो !···कान खोल,
सुनो !)
मंगल-कामना का दृढ़ अवलंब सँजो,
छवि सहानुभूति की विभूति-सी समेट
लो;
जिसमें भरी सुधा ममता-दया की भली,
ऐक्य के सुदृढ़तम ताने-बाने लिये—
सदन सजाओ सहयोग का चिरन्तन;
बल मनोयोग का समेट बाहु-बाहु
मध्य—
चिन्तन-चतुर 'देव-भाग' हथियाओ;
पर-सेवा···नहीं-नहीं···सच्ची जन-
सेवा करो;
(अपना-पराया भला आर्यता में संभव
कभी ?)
उपकार···नहीं-नहीं···कर्त्तव्य पालो
सही,
नैतिक विचार का सहारा संबल लिये
रहो !
रूपसी-सी क्षमता को लिपटाये,
चरित्र-सपूत का सदैव परिपालन करो !
सरल-सुशान्त बनो,
(केवल सुजन-हित)
क्रुद्ध-आकृष्ट दिखो,
(आततायी-नीचों पर)

यथायोग्य वर्तो—
यथार्थ का न साथ छोड़ो,
कल्पना की गोद पले मिथ्या आदर्श
तजो,
बाहरी चमक ही न साध्य स्वीकार
करो,
व्यर्थ ही, न भोले-भाले साधनों को
दुतकारो,
प्रकृति के न दास बनो,
(साथ पर, गहे रहो !)
आत्म-तत्व बूझो-समझो,
(उसी में 'लसो' नहीं !)
परब्रह्म को उपासो,
(पर, सत्-चित् भूलो नहीं !)
सन्तुलित 'चैत' पर ज्ञान का मिहिर उगे,
व्यवहार-खाद द्वारा कर्मठ-वृक्ष लगें बढ़ें;
सारा तम-तोम, जीर्ण जरा-आवरण न
शेष रहे;
वसुधा कुटुंब बने।
'मनुर्भव' याद रखो !
'मा भैः' न भूलो कभी !
'असतो मा सद्गमय' मूल-मंत्र बना
रहे,
'सत्यमेव जयते' खराद पर चढ़ा रहे,
'दुरितानि परासुव' प्रभु से सदैव कहो,
'यद् भद्रं तन्न आसुव' की प्रार्थना
भली-सी करो !
(पर, मुख से ही नहीं—मनसा-कर्मणा
भी !)
अमर-पुत्र बनो !
अग्निध्वज सदृश तनो !
अग्रणी सदैव रहो !
पुरोहित का दाय लहो !
तब सही आर्य होगे !
अपराजेय शिरोधार्य होगे !

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सर्वश्रेष्ठ धार्मिक पुस्तकें

महात्मा आनन्द स्वामीजी की रचनाएं

तत्त्वज्ञान	३.००
प्रभुदर्शन	२.५०
प्रभुभक्ति	१.५०
आनन्द गायत्री कथा	०.७५
एक ही रास्ता	१.००
शंकर और दयानन्द	०.५०
सत्यनारायण व्रत कथा	०.७५
भक्त और भगवान्	१.००
मानव जीवन गाथा	१.००
उपनिषदों का संदेश	१.५०
घोर घने जंगल में	२.५०
महामन्त्र	१.००
सुखी गृहस्थ	१.००
बोध कथाएं—प्रथम भाग	१.५०
बोध कथाएं—द्वितीय भाग	१.५०
बोध कथाएं—दोनों भाग एक जिल्द में	३.५०

महर्षि दयानन्द की पुस्तकें

आत्मकथा	०.४०
स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश	०.१०
वेदान्तिध्वान्त निवारण	०.१६
वेदविरुद्धमत खण्डन	०.३७
शिक्षापत्रीध्वान्त निवारण	०.३७
आर्याभिविनय	०.७५
आर्योद्देश्यरत्नमाला	०.१०
ऋग्वेद भाष्य का प्रथम सूक्त	०.२५
भ्रान्ति निवारण	०.२७
व्यवहारभानु	०.२५
भ्रमोच्छेदन	०.१५
यजुर्वेदसंहितामूल (सजिल्द)	२.५०

प्रो० नित्यानन्द वेदालंकार कृत

पूर्व और पश्चिम	७.५०
जीवन की राहें	४.००
प्रार्थना दीप	२.००
सन्ध्या विनय	१.५०
सु-राज्य की रूपरेखा	०.५०

पं० भगवद्दत्त कृत

भारतीय संस्कृति का इतिहास	६.००
आर्य राजनीति के मूल तत्त्व	०.३०

प्रो० सुरेशचन्द्र वेदालंकार कृत

मन की अपार शक्ति	१.२५
आकर्षक व्यक्तित्व कैसे बने ?	१.५०

पं० रामचन्द्र देहलवी कृत

दो सनातन सत्ताएं	१.००
ईश्वर ने दुनिया क्यों बनाई ?	०.४०

स्वामी अच्युतानन्द लिखित

व्याख्यान माला	२.५०

स्वामी ब्रह्ममुनि कृत

बृहदारण्यक उपनिषद् कथामाला	३.००
प्रश्न	०.७५
मुण्डक	०.३१
माण्डूक्य	०.६२
ऐतरेय	०.५०
तैत्तिरीय	१.२५

सभी प्रकार का आर्य साहित्य मिलने का एकमात्र स्थान

गोविन्दराम हासानन्द, नई सड़क, दिल्ली-६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आदि सर्ग में प्राणी का उद्भव

आचार्य उदयवीर शास्त्री
द्वारा लिखित
महत्वपूर्ण लेख

"तस्माद्विराडजायत विराजो अधि पूरुषः।"
पशूंस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्यान् ग्राम्याश्च ये।"
"तस्मादश्वा अजायन्त के चोभयादतः।
"गावो ह जज्ञिरे तस्मात् तस्माज्जाता अजावयः।"
"यत्पुरुषं व्यदधु.....।"
[ऋ० १०।९०]

आस्तिक जगत् में यह एक निर्विवाद तथ्य माना जाता है, कि अचिन्त्यशक्ति परमात्मा के द्वारा इस समस्त चराचर ब्रह्माण्ड की रचना होती है। वेदों में इसके स्पष्ट उल्लेख हैं। वेदों के पुरुष सूक्त में प्राणी और अप्राणी जगत की रचना के निर्देश उपलब्ध होते हैं, अन्यत्र भी अनेकानेक स्थलों में इस प्रकार के वर्णन हैं, जिनसे परमात्मा के द्वारा जगत् की रचना पर प्रकाश पड़ता है। इस प्रकार के सृष्टि विज्ञान के विविध अंग हैं, जिन पर शास्त्रकारों ने विभिन्न दिशाओं से विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किये हैं। यद्यपि मानव सामाजिक दृष्टि से प्राणी जगत का सर्वश्रेष्ठ भाग है, बुद्धि और प्रतिभा का भण्डार है; फिर भी सृष्टि विज्ञान विषयक किसी तत्त्व की जानकारी के लिए इसके जितने बाह्य या आन्तर साधन हैं, उनका क्षेत्र अति सीमित है। हम अपनी इन्द्रियों से स्थूल जगत् के भी बहुत अल्प अंश को प्रत्यक्ष कर पाते हैं। जानकारी के लिए हमारा अधिक बल शब्द और अनुमान पर ही रहता है। शब्द की पारस्परिक असमानता जब सन्देह जनक हो जाती है, तो अनुमान का ही सहारा लेना होता है।

प्रयोगात्मक प्रक्रियाओं का क्षेत्र भी सीमित है, उनके परिणामों से भी हम अनेक अज्ञेय स्थितियों का अनुमान ही कर पाते हैं; बहुत जगह तो केवल कल्पना की दौड़ रहती है। यह आवश्यक नहीं, की कल्पना सदा निराधार हो, या यथार्थता की ओर कदम बढ़ाने में असहायक हो; बहुत बार कल्पना अधिकाधिक सच्चाई तक पहुंचाने में सक्षम रहती है। पर अखिल ब्रह्माण्ड की दृष्टि से वह सच्चाई की जानकारी आंशिक ही समझनी चाहिए। सृष्टि विज्ञान के क्षेत्र में "प्राणी के उद्भव का आदि स्वरूप" भी एक ऐसा विषय है, जिस पर अति प्राचीन काल से मानव मस्तिष्क में द्वन्द्व मचता रहा है, और आगे भी इसके ज्ञानपूर्वक शान्त हो जाने की अधिक सम्भावना नहीं है; पर इन विषयों पर विचार करना मननशील व्यक्ति का अधिकार है, इसी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नाते यह विचार प्रस्तुत किया जाता है।

आदि मानव का प्रादुर्भाव कैसे:

लघुकाय कृमिकीट से लगाकर वृहत्काय पशु, मानव आदि का उद्भव आदि सर्गकाल से ही यदि माना जाता है तो किसी भी विचारक के सामने यह एक महत्त्वपूर्ण समस्या आती है, कि इतने बड़े आदि मानव का अचानक प्रादुर्भाव कैसे हुआ होगा। यह समस्या इसलिए आती है, कि चालू संसार में प्रजनन की जिस व्यवस्था को देखा जाता है, उद्भव के सर्व प्रथम अवसर पर उसका होना सम्भव नहीं। कारण यह है, कि मानव-शिशु दस महीने माता के गर्भ में घोषित एवं संवर्धित होकर जन्म लेने पर भी इतना असहाय होता है कि वह अपने जीवन की रक्षा एवं पोषण में सर्वथा अक्षम रहता है। हमारी काल गणना के अनुसार कई वर्ष उसके इस योग्य बनने में व्यतीत हो जाते हैं, जब वह स्वतः रक्षा एवं पोषण आदि के लिए समर्थ हो पाता है।

कृमि आदि का उद्भव कैसे ?

यदि गम्भीरता से विचार कर देखा जाय, तो जो समस्या मानव-शिशु के विषय में प्रस्तुत की जाती है, वह लघुकाय प्राणियों के लिए भी समान है और ठीक वही समस्या आदि सर्ग काल में एक कोश के प्राणी के लिए भी सम्भव है। यह कौन कह सकता है, कि एक कोश युक्त प्राणी प्रथम क्षण से ही अपने उपयुक्त सर्व सामर्थ्य युक्त होता है। यदि होता है, तो वह प्रबन्ध किसका है, यह एक विचारणीय समस्या है। जिस प्रबन्ध से वह प्राणी आगे जीवन के लिये कदम बढ़ाता है, वही प्रबन्ध मानव-शिशु के लिए क्यों सम्भव नहीं ? पर इसके भी पहले एक समस्या है, कि उद्भव के समय मानव देह की कैसी स्थिति रहती है। यदि शिशु देह के समान उसकी स्थिति है, तो हमारी दृष्टि से उसकी रक्षा एवं पोषण का प्रबन्ध होना अशक्य है। पर एक सैल (कोष्ठक) के प्राणी अमीबा की आद्य स्थिति कैसी होती है, यह भी सम्भवतः

प्रयाण-गीत

वीर, तुम्हें ही विजय संजोना !
जो भी हो सत् ध्येय तुम्हारा,
कुछ भी हो पाथेय-सहारा;
बढ़ते जाना, पथ-दूरी से—
वीर-धीर कब थककर हारा ?
यम-जैसे दृढ़ कदम बढ़ाना,
समय नहीं संशय में खोना !
वीर, तुम्हें ही विजय संजोना !
गड़ड़-गड़ड़ घन-घोर-घोष हो,
तड़ड़-तड़ड़ तड़िता सरोष हो;
शक्रायुध-टंकार भयंकर—
प्रलयंकर-सा भरा जोश हो।
बढ़ते जाना समर-साहसी,
व्याघातों से व्यग्र न होना !
वीर, तुम्हें ही विजय संजोना !
तुंग-शृंग मग-मध्य खड़ा हो,
उग्र उदधि में ज्वार अड़ा हो;
तीव्र तमिस्रा, झंझानिल में—
साहस भी लगता उखड़ा हो।
क्रूर बने हों महाभूत,
पर पराभूत, ओ शूर, न होना !
वीर, तुम्हें ही विजय संजोना !

—बालकृष्ण गर्ग

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अभी स्पष्ट नहीं। कहा जाता है कि अमीबा नाम का कोई प्राणी जगत में कभी उपलब्ध नहीं है, वह केवल कल्पना प्रसूत प्राणी है, और उसी कल्पना के आधार पर यह शास्त्र का विशाल भवन खड़ा कर दिया गया है, तब मानवदेह-विषयक कल्पना को अन्यथा क्यों माना जाय ?

एक सुझाव

क्रान्तदर्शी विचारकों ने यह सुझाव प्रस्तुत किया है, कि आद्य मानवदेह किशोर अवस्था के देह के समान हो सकता है। अवस्था का यह सुझाव सर्ग की चालू स्थिति पर अवलम्बित है। आज हमारी दृष्टि से मानव की किशोर अवस्था सोलह वर्ष की आयु के आसपास समझी जाती है। यह देह की ऐसी स्थिति है, जिसे परपोषण की अपेक्षा नहीं, वह स्वतः इस कार्य के लिए समर्थ रहती है। यदि सुझाव को मान लिया जाता है, तो दूसरी समस्या यह है, कि इतना बड़ा देह अचानक कैसे उठ खड़ा होता है ? इसकी रचना कहाँ हो रही होती है ? इस स्थिति में इसका उभरना अनायास बुद्धिगम्य नहीं है।

इसको समझने के लिए हमें चालू सर्गकाल के प्रजनन की स्थिति पर ध्यान देना चाहिए; सम्भव है, वहां की कोई पकड़ इसे कुछ स्पष्ट कर सके, और इस समस्या के समझने में कुछ सहायक हो। साधारण रूप से प्रजनन की विधाओं को चार वर्गों में बांटा गया है, जिनमें प्राणि-मात्र का समावेश हो जाता है। वे चार वर्ग हैं—जरायुज, अण्डज, उद्भिज्ज, और स्वेदज अथवा ऊष्मज। अन्तिम वर्ग में सूक्ष्म कृमि-कीट आदि की गणना की जाती है। इनके देह अपने उपादान कारणों में एक विशेष सीमित ऊष्मा की प्राप्ति पर विशिष्ट आकृतियों के रूप में उभर आते हैं। ये देह अति सूक्ष्म स्थिति से लगाकर चक्षुद्वारा दृश्य सूक्ष्म तथा कुछ स्थूल अवस्था तक रहते हैं। सम्भवतः इनमें अनेक देह इतने सूक्ष्म हों, जिनको हम शक्तिशाली बाह्ययन्त्रों की सहायता से भी चक्षु द्वारा न देख सकते हों। ऐसे सभी दृश्या-दृश्य देहों की रचना ऊष्मा के उपयुक्त स्तर पर पहुंचने से उनके उपादान तत्त्वों द्वारा पूर्ण हो जाती है। सम्भवतः ये देह थोड़े काल भी किसी बाह्य खोल से आवृत्त नहीं रहते। कारण यह है कि ये इतने सूक्ष्म होते हैं, कि इन्हें आपात से बचाने और सुरक्षा के लिए खोल (कोश में रक्खा जाना) अनपेक्षित है। पर हम देखते हैं, कि जब कुछ बड़े देहों की रचना प्रारम्भ होती है, तो

उसकी खोज !

वह बसता था मन मन्दिर में,
पर मैं उसको जान न पाया।
वह प्राणों से भी समीप था,
मैं उसको पहचान न पाया।

He stayed in the temple of my heart,
And I knew naught,
Nearer than the nerve of life,
And I realised it not.

हर में दिल में मकीं था,
मुझे मालूम न था।
रगे-जां से भी करीं था,
मुझे मालूम न था।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ऊष्मज देहों के वर्ग की सीमा समाप्त हो जाती है। उन देहों की रचना में एक नियत काल तक भ्रूण की सुरक्षा के लिए प्राकृतिक व्यवस्थाओं के अनुसार खोल अथवा कोश का प्रबन्ध रहता है।

उद्भिज्ज वर्ग

प्रथम उद्भिज्ज वर्ग पर विचार कीजिए। कुछ ऐसे सर्वमान्य सिद्धान्त होते हैं, जिनको किसी भी प्रकार विवेचन करने के पूर्व निःशंकरूप में स्वीकार कर लिया जाता है, जैसे प्रमेय की सिद्धि प्रमाण से होती है। ऐसे ही सिद्धान्तों में एक है—कारण पूर्व होता है, कार्य पीछे। इसी को हम ऐसे कह सकते हैं, कि बीज पहले होता है और वृक्ष बाद में। साधारण लोगों में कभी यह बहस छिड़ी सुनी जाती हैं, कि बीज पहले या वृक्ष पहले। कारण यह कि हम अपने सामने बीज से पेड़ और पेड़ से बीज होते देखते हैं, तब इनमें से पहले किसको कहें और पीछे किसको। तत्त्वदर्शी विद्वानों ने बताया है—बीज पहले होता है कार्य अनन्तर। अब विचार कीजिए सर्ग के आदिकाल में पहले एक पीपल के वृक्ष ने भूमि से ऊपर अपना सिर निकाला। वह बढ़ा और कालान्तर में उस पर फल लगे। ये आगे उगने वाले पीपल वृक्षों के बीज हैं। यह चालू सर्गकाल में समान प्रजनन की प्रक्रिया है। हमें ध्यान इस बात पर देना है, कि प्राकृतिक प्रबन्धों व व्यवस्थाओं के अनुसार अगले पीपल वृक्ष को उगाने वाले बीज को एक विशेष प्रकार के खोल में सुरक्षित रक्खा गया है। जब वह प्रजनन की अनुकूल स्थिति में होगा, तब उसमें से सजातीय अंकुर फूट निकलेगा।

तूफान !

तूफानों की आंधी में भी
घबराए, ना गिर जाए।
टकराए, जो आगे बढ़कर
विश्व विजय कर पाएगा।

आदि वृक्ष

अब हमें लौटकर सबसे पहले उगने वाले पीपल वृक्ष की स्थिति पर विचार करना चाहिए। यह निश्चित है, कि यह इस सर्ग के आदिकाल का सबसे पहला पीपल है। इससे पहले अभी कोई पीपल का वृक्ष नहीं था, जिसने बीज को भूमि में छोड़कर इसे उगाया हो। तब क्या यह वृक्ष बिना बीज के उग आया है? तत्त्वदर्शी विद्वानों का कहना है, यह असम्भव है। बिना बीज के कोई अंकुर नहीं उग सकता, तब समस्या सामने आती है, कि सबसे पहले उगने वाले पीपल वृक्ष का बीज कैसे बना? किसने बनाया और कहां सुरक्षित था? समस्या बड़ी सच्ची और पक्की है। आइये सोचें, विद्वानों ने इस विषय में क्या विचार दिये हैं।

पीपल वृक्ष ने जो बीज अपने सन्तति प्रजनन के लिए प्रस्तुत किये हैं, उनमें

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तुमसे प्रश्न !

तुम कहते हो
अब जीने की इच्छा नहीं है
संसार देख लिया है
सुख-दुःख सब
भोग लिये हैं
अब
जग से
जीवन से
वैराग्य हो गया है।
किन्तु,
तुमने
निज हेतु जीवन जिया है
कभी
कुछ
तुमसे हुआ,
जब तुमने
मानवता असहाय देखी ?
जीवन तो
सभी जीते हैं
किन्तु
मनुष्य मात्र के कल्याण के लिये
कितने विष पीते हैं ?

—कन्हैयालाल किंगर

अंकुर उत्पन्न करने वाले सब तत्त्व प्रकृति से इस रूप में उन्हें प्राप्त करने की यह चालू सर्गकालिक प्रक्रिया का प्रारम्भ नहीं होता, उस समय प्रकृति के नियम व व्यवस्था उस प्रक्रिया को स्वतः पूरा करते हैं। यद्यपि वृक्ष से बीज का प्रादुर्भाव भी प्राकृतिक नियम व व्यवस्थाओं से नियन्त्रित है, पर मानव किसी अंश तक उसे देखता जानता और सीमितरूप में उसके प्रादुर्भाव के लिए अपने कृतित्व का दम भर सकता है; फिर भी आद्य अवस्था में यह सर्वथा असम्भव है। इससे हम समझ सकते हैं, कि सबसे पहले उगने वाले पीपल वृक्ष के बीज का निर्माण प्रकृति के गर्भ में स्वतः उन नियम व व्यवस्थाओं के अनुसार होता है, जो इस विश्व ब्रह्माण्ड के संचालक हैं। बीज के अन्दर अंकुर जननशक्ति जिन भौतिक अथवा प्राकृत तत्वों में आहित है, संभवतः विज्ञान के आधार पर हम उन तत्वों का विश्लेषण कर उनके पहचानने और बीज-निर्माण में उनके प्रतिशत भाग को जान लेने में समर्थ हो सकते हैं, पर यह निश्चित है, उन तत्वों का उसी मात्रा में संकलन कर हम अंकुरोत्पादन शक्ति सम्पन्न बीज का निर्माण करने में अक्षम रहते हैं वस्तुतः प्रकृतिसम्पादित कार्य को जान लेने मात्र में मानव की प्रवीणता है, उसका निर्माण प्रकृति का अपना कार्य है।

आद्य बीज की स्थिति—

इस विचार प्रसंग में हम यह समझने में समर्थ हो सके हैं, कि सबसे प्रथम उगने वाले पीपल वृक्ष के बीज का निर्माण प्रकृति के गर्भ में उसके नियम व व्यवस्थाओं के अनुसार स्वतः हुआ। स्वतः का अभिप्राय है, वह बीज चालू सर्गक्रम के अनुसार पेड़ से उत्पन्न नहीं हुआ। अब हम कल्पना करते हैं, वे अंकुरजनक भौतिक तत्त्व प्रकृति गर्भ में जब संकलित हुए तब एक खोल में संपिण्डित जैसे रहे होंगे। अंकुरजनन की अनुकूल अवस्था आने तक प्रकृति द्वारा उनका पोषण होता रहा। जब वह अवस्था अपनी पूर्णता तक पहुंच गई, तब खोल फटा और अंकुर ने धीरे-धीरे अपना सिर भूमि के ऊपर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

निकाला होगा। सम्भव है, उस बीज की बनावट कुछ ऐसी ही रही हो, जैसा बीज हम वृक्ष से पाते हैं। वृक्ष पर भी यह बीज प्रारम्भ से अन्त तक कैसे बनता चला आता है, इसे भी हम आज पूर्णरूप में कहां समझते है ? यह प्रकृति के अपने नियम व व्यवस्थाओं का चमत्कार है। मानव का इसमें दखल नहीं। फलतः उद्भिज वर्ग में सबसे पहले उगने वाले

ऋषि दयानन्द !

आदि मनुज से सुन्दर तम तुम
आदि प्राण से सुन्दर प्राण
तुम मानव थे, युग मानव या
मानवता के ही अभियान

—राकेश

वृक्ष के बीज का निर्माण कैसे हुआ होगा, यह समझने का हमने यत्न किया है। इससे हम इस परिणाम पर पहुंचते हैं, कि बीज रूप में संकलित वे तत्त्व अंकुरोत्पत्ति से पहली अवस्थाओं में अवश्य किसी एक कोश [खोल] में सुरक्षित रहे होंगे, जिस स्थिति को हम आज सर्ग की चालू प्रक्रिया में स्पष्टरूप से देखते समझते हैं।

वृक्ष कैसा उगा:—

उद्भिज्ज वर्ग के विषय में एक आशंका की जा सकती है, कि यह रचना अंकुरोत्पत्ति से प्रारम्भ रही होगी, या इसमें एक साथ बड़ी आकृति के पेड़ उग खड़े हुए होंगे। विचार यह समाधान देता है कि इस वर्ग में प्रारम्भ से ही बड़े पेड़ उग खड़े होने की अपेक्षा नहीं है। कारण यह है कि ऐसी कल्पना उगने वाले की सुरक्षा की भावना से हो सकती है। पर आदिकाल में जब उद्भिज वर्ग ने अंकुर के रूप में भूमि से ऊपर सिर उठाया उस समय इस वर्ग की हानि पहुंचाने वाली किसी स्थिति की सम्भावना प्रतीत नहीं होती। इस वर्ग के अनुकूल परि-पोषण के लिए हवा पानी और धूप आदि की अपेक्षा होती है, जो प्राकृतिक व्यव-स्थाओं के अनुसार प्रचुर-मात्र में इनको सदा उपलब्ध है, उस समय भी उपलब्ध थी। आज इनकी विरोधी स्थितियां—जो इनका विनाश करने में सदा तत्पर रहती हैं—अत्यधिक मात्रा में विद्यमान हैं; फिर भी इस वर्ग का विनाश सर्वथा असम्भव है। प्रकृति ने इनके

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

साजात्य-प्रजनन की जो व्यवस्था रक्खी है, उसमें बीज शक्ति की इतनी अधिक प्रचुरता है, कि कितनी भी मात्रा तक उसका प्रतिरोध होने पर विनाश सम्भव नहीं। प्रतिरोध भी सम्भव की सीमा को लांघ नहीं सकता। यह भी कारण है, कि आगे आने वाले अण्डज जरायुज प्राणि-जगत् का यह खाद्य है, जीवन-निर्वाह का एकमात्र साधन। इसकी असुरक्षा अथवा विनाश की सम्भावना करना जगत् के विनाश की सम्भावना करना है। फलतः आदिकाल में उद्भिज्ज वर्ग के अंकुरस्थिति से प्रारम्भ होने में असुरक्षा आदि की कोई समस्या नहीं रहती, इसलिए प्रारम्भ में ही एक साथ बड़े पेड़ों का उत्पन्न होना अविचार्य है।

अण्डज वर्गः—

उद्भिज्ज वर्ग के अनन्तर अण्डज वर्ग आता है। इस वर्ग में पक्षी और सरीसृप जाति के प्राणियों का समावेश है। सरीसृप जातियां जल-स्थल दोनों में पाई जाती हैं। इस वर्ग में यह देखा जाता है, कि भ्रूण एक विशेष प्रकार के खोल से सुरक्षित रहता है, मातृगर्भ में उपयुक्त पोषण प्राप्त कर गर्भ से बाहर भी नियत काल तक कोशयुक्त रहता हुआ पोषण प्राप्त करता है। भ्रूण का यथायथ परिपाक होने पर खोल फटता है, और बच्चा बाहर निकल आता है, इस प्रकृति का एक चमत्कार है। इस वर्ग में उत्पत्ति-काल की दृष्टि से कुछ अधिक बड़े देह वाले प्राणियों का समावेश है, तथा यह एक विचारणीय बात है, कि भ्रूण का गर्भ से बाहर भी परिपोषण होता है। संभवतः इसीलिये प्रकृति ने इस वर्ग के भ्रूण के खोल को अपेक्षाकृत सुदृढ़ बनाया है, जिससे अनायास प्राप्त बाह्य बाधाओं एवं असुविधाओं का भ्रूण पर प्रतिकूल प्रभाव न हो सके।

आदि देहों का प्रादुर्भावः—

चालू सर्ग कालिक इस वर्ग में होने वाली मातृगर्भ से बाहर भ्रूण की इस परिपोषण प्रक्रिया से अनुमान होता है, कि सर्व प्रथम आदि काल में मानव आदि बड़े देहों की रचना प्रकृतिपोषित सुरक्षित उपयुक्त कोशों द्वारा हुई होगी। चालू सर्गकाल में देहों के अनुसार कोशों (अण्डों) के आकार में विभिन्नता देखी जाती है। प्रकृति के गर्भ में इस प्रकार के कोशों का बनना संभव है, जिनमें मानव आदि देहों की रचना सर्वप्रथम प्राकृत नियमों के अनुसार हुई हो, और उनका यथावसर परिपाक होने पर उनमें से किशोर अवस्था के मानव आदि प्राणियों का प्रादुर्भाव हुआ हो।

अण्डज वर्ग के आगे बड़ी देहवाला प्राणि वर्ग जरायुज है, जिसमें मानव एवं समस्त पशु मृग आदि का समावेश है, कोश में भ्रूण के परिपोषण की प्राकृत व्यवस्था इस वर्ग में भी समान है। मातृ-गर्भ में भ्रूण पूर्णाङ्ग होने तक जरायु में परिवेष्टित रहता है। स्निग्ध सुदृढ़ चमड़े जैसे पदार्थ की थैली का नाम जरायु है। पूर्णाङ्ग होने पर बालक इसको भेदकर ही मातृगर्भ से बाहर आता है। विभिन्न प्राणिवर्गों में भ्रूण के परिपोषण और पूर्णाङ्ग होने तक के लिए व्यवस्था प्रबन्धों में थोड़ा बहुत अन्तर देखा जाता है, पर भ्रूण की सुरक्षा व उपयुक्त पुष्टि एवं वृद्धि तक के लिये उसका एक विशिष्ट

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कोश में परिवेष्टित होना सर्वत्र समान है। यह एक ऐसी नियत व्यवस्था है, जो प्राणी के प्रादुर्भाव की आद्य स्थिति पर पर्याप्त प्रकाश डालती है। चालू सर्गकाल अथवा मैथुनी सृष्टि में नर-मादा का संयोग प्राणी के साजात्यप्रजनन की जिस स्थिति को प्रस्तुत करता है, वह स्थिति अमैथुनी सृष्टि में प्राकृत नियमों व व्यवस्थाओं के अनुसार प्रकृतिगर्भ में प्रस्तुत हो जाती है। प्रकृतिनिर्मित उपयुक्त कोशों में सुरक्षित एवं परिपोषित मानव आदि देह यथावसर प्रादुर्भूत हो जाते हैं। मनु आदि ने सृष्टि वर्णन के प्रसंग में प्राणि प्रादुर्भाव के लिए ऐसे संकेत दिये हैं [१।७-९,१२]।

देहरचना एक चमत्कार—

आज भी मानव आदि देह रचना की प्रक्रिया प्रकृति का महान् एवं अद्वितीय चमत्कार है, अति प्रतिभाशाली भी मानव इस दिशा में सर्वथा अपनी इच्छा के अनुसार चलने में असमर्थ है। चमत्कारिणी प्रकृति नटी के पीछे बैठा मायावी सूत्रधार सर्वात्मना इसका संचालन कर रहा है। मानव चाहे जितना प्रतिभाशाली व क्रान्तदर्शी हो, इस नटी के अभिनय को बहुत थोड़ा जान पाता है। उस अचिन्त्यशक्ति नियन्ता के नियम व व्यवस्था प्रबन्ध अतिगम्भीर हैं। अनादिकाल से मानव ने उनको समझने की दिशा में स्तुत्य प्रयत्न किया है और किसी सीमा तक समझा है। पर इस सबके पीछे सीमा तक समझा है। पर इस सबके पीछे उस प्रभु का अनुकम्पापूर्ण वरद हस्त तप्त प्राणी पर बराबर छाया कर रहा है। जैसे प्राणी का आद्य प्रादुर्भाव होता है, उसी शक्ति की दयापूर्ण नियत प्रेरणा से मस्तिष्क में उपयुक्त ज्ञान प्रतिभासित हो जाता है, जिससे प्राणी अपने आहार-विहार आदि के लिये सचेत होता है। इन्द्रियाँ अपने कार्यों में तत्पर हो जाती हैं। समस्त प्राणियों में एक मात्र मानव ज्ञान-श्रेष्ठ है।

आदिमानव का व्यवहार—

आदि सर्ग काल में इन्द्रियों के बाहर की ओर खुलते ही मानव ने विविध ऐश्वर्यों से भरी अदभुत छटा परिपूरित अंगड़ाईयाँ लेती मदमाती प्रकृति को अपने चारों ओर देखा। वह आश्चर्य चकित था, सोते से जागे हुए के समान मानो वह मानव पहचानने का प्रयत्न कर रहा था, कि यह सब देखा-भाला, परखा-जोखा है। यह कहने की आवश्यकता नहीं, कि ऐसे अनेक प्रणियों का प्रादुर्भाव आदि सर्ग में हुआ, तथा उस दिव्य शक्ति की प्रेरणा से प्राणी को अनन्त प्राकृत अन्य ऐश्वर्यों के समान ज्ञान एवं वाक् का प्रसाद प्राप्त हुआ। मानव में वाक् अपने पूर्णरूप में प्रकट हुई। यह एक लम्बी कहानी है, जो पर्याप्त पर्यालोचन की अपेक्षा रखती है, कि आदि सर्गकाल में मानव जीवन का कार्यक्रम किस प्रकार चालू किया गया होगा, और वह कैसा रहा होगा; चाहे मानव की स्थिति का कोई स्तर माना जाय। कल्पना की जाती है, उस अवस्था में मानव के प्रादुर्भूत होने पर अवश्य कुछ काल के अनन्तर उसे भूख प्यास ने सताया होगा। उसकी इस अनुभूति ने उसके प्राक्तन संस्कारों को जगाने में वन्दी का काम किया। उसके चारों ओर फलों से लदे वृक्ष थे, निर्मल मुक्ताभ जलधाराओं के कल-कल करते

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्रोत थे, वायु के प्रकम्पन से स्खलित फल भूमि पर फैले थे, उद्बद्ध संस्कारों से आकृष्ट मानव ने फलों को उठाया और क्षुधा को निवृत्त किया, एवं जल से तृषा को। जीवन चलने लगा।

अन्य धार्मिक ग्रन्थों में निषिद्ध फल को मानव द्वारा खाये जाने का वर्णन आदि सर्ग की इसी स्थिति की ओर संकेत करता है। प्राणिदेह में आये बिना फलोप-भोग की अयोग्यता ही उसके निषिद्ध होने का स्वरूप है। प्रलयकाल में जीवात्मा की ऐसी स्थिति सम्भव नहीं। आदिसर्ग में यह अवस्था आने पर जीवात्मा का प्रादुर्भाव और फलोपभोग अनिवार्य है, यही आत्मा का स्वर्ग से गिरकर संसार में आ जाना है, जिसको उन ग्रन्थों में ईश्वर के आक्रोश के रूप में वर्णन किया गया है। इन्द्रियों के विषय शैतान का रूप हैं, जो आत्मा को इधर आकृष्ट कर लेते हैं। इनमें आसक्त होकर आत्मा भगवान् से विमुख होता है, यही शैतान द्वारा भगवान् की आज्ञा को न मानना, अथवा उसका तिरस्कार करना है। आदि-कालिक मानव जीवन के प्रारम्भ के विषय में यह कल्पना कोई भी निराधार नहीं है। सद्योजात वत्स की आहारादि की ओर प्रवृत्ति के द्वारा कोई भी विचारशील व्यक्ति इसका स्पष्ट अनुभव कर सकता है।

उक्त कल्पना का आधार—

इस कल्पना में आदि मानव के प्रारम्भिक जीवन की प्रक्रिया का सच्चा बीज निहित है। भले ही आज हम इसे केवल कल्पना कह सकते हैं, और ऐसा ही कहना चाहिये, पर आज तक इतनी निर्दोष कल्पना इस विषय में अन्य कोई सामने नहीं आई। इसमें आधारभूत सार इतना है, कि यहां चेतन तत्त्व की स्वतन्त्र सत्ता को स्वीकार कर आगे पग बढ़ाया गया है, अन्य कल्पनाओं में ऐसा नहीं, इसलिये उनमें अनेक न्यूनता एवं बाधाओं की अधिक सम्भावना है। इसके अतिरिक्त विकासवाद की मान्यता में सजातीय प्रजनन की सर्वप्रमाणसिद्ध व्यवस्था का व्यक्तिक्रम विशेष बाधक है। विजातीय प्रजनन के लिये जो हेतु विकासवाद में प्रस्तुत किये जाते हैं, वस्तुतः वे हेत्वाभास हैं। विभिन्न योनियों तथा जातियों की देहरचना में दीखनेवाला साधारण सादृश्य उनके एक ही मूल से विविध प्रसार में आने का हेतु नहीं माना जा सकता, क्योंकि विभिन्न स्थानों में भिन्न उपादानों तथा भिन्न साधनों द्वारा उद्भूत पदार्थों में अनुक्रमपूर्ण समानता देखी जाती है। उनका किसी एकमात्र मूल से विभिन्न प्रसार होना प्रमाणसिद्ध नहीं होता। देहरचना में साधारण समा-नता रहने पर भी विभिन्न योनियों के अपने प्रसार अपने विभिन्न उपादान आदि निमित्तों पर अवलम्बित हैं। आदिकाल में जो श्रेणी जिस रूप में चली, सजातीय प्रजनन के नियमानुसार आज भी वह वैसी ही चल रही है, और समस्त सर्ग-काल तक चलती रहेगी; यह एक नियत व्यवस्था है उस व्यवस्थापक की जो सब का संचालन व नियन्त्रण करता है।

निगमन—

आद्यकालिक प्राणी-उद्भव के विषय में उक्त विवेचन से कोई भी विचारक इस परिणाम पर पहुँचता है, कि गत

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सर्गकाल में अनुष्ठित अपने धर्माधर्मरूप कर्मों के अनुसार प्रत्येक आत्मा आदि सर्ग-काल में विभिन्न शरीरादि साधनों के साथ सम्बद्ध होकर नये संसार में प्रवेश करता है। जीवात्मा का यह प्रत्येक सर्ग का आदिकालिक प्रादुर्भाव है। जिन शरीरादि विभिन्न साधनों से आत्मा का सर्वप्रथम सम्बन्ध होता है, उन्हीं को अनन्तर काल में विविध योनियां कहा जाता है। इस प्रकार भूमण्डल पर उपलब्ध समस्त प्राणी-जातियों का प्रदुर्भाव आदिसर्ग से प्रारम्भ हो जाता है। प्रत्येक प्राणि-योनि सजातीय सन्ततिक्रमानुक्रम से बराबर आदि-काल से ही आज तक चली आ रही है, और आगे इसी प्रकार अगला प्रलयकाल आने तक चलती रहेगी। यह सम्भव है, किन्हीं प्राकृतिक कारणों से इस लम्बे यात्राकाल में कोई जाति नष्ट हो गई हो, अथवा किन्हीं विशिष्ट निमित्तों से कभी किन्हीं विशिष्ट जातियों का उद्भव हो; पर जो उपलब्ध हैं, उनका क्रम निर्बाध है और प्रत्येक जाति का अपना स्वतन्त्र अनुक्रम है। किसी एकमात्र मूल जाति से विभिन्न एवं विजातीय शाखा फूटती रही हो, ऐसा नहीं है। स्वतन्त्र चेतन तत्त्व और कर्मव्यवस्था के न मानने की स्थिति में प्राणि सर्ग को समझने के लिये 'क्रमिक विकास' जैसे सिद्धान्त की कल्पना की गई है। किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करने या समझने के अनेक मार्ग हो सकते हैं पर उनके गुण दोषों एवं बाधा सुविधाओं की परख कर लेना अच्छा ही है।

जीवन

जीवन की सब दौड़ धूप या,
ठोकर धक्कों का अभियान,
अपने आत्मिक अनुभव भी तो,
उन्हें खींचते हैं गतिमान।
नहीं जानते कौन दिशा में,
करते हैं हम कहाँ प्रयाण।
यह भी नहीं प्रकट है हम पर,
कौन काम का यह संधान॥
कुछ ही समय बीत जाने पर,
बरफ पिघल होता है पानी।
पर अमूल्य जीवन भी बनता,
किसी समय यही कहानी।
निज उद्देश्य पूर्ति हित जीवन,
है निश्चित साधन एक भारी।

हमें लक्ष्य पर पहुँचाने को,
जीवन समझो सफल सवारी।
कण्टकमय पथ या निष्कण्टक,
पर जीवन अविरल संग्राम।
मुक्ति हेतु यह सेतु तुल्य है,
दुर्लभ कहें न इसके दाम।
सब प्रतिकूल पराभव करने,
है यह जीवन परम ललाम।
मानव जीवन मोम वर्तिका,
जलते दोनों ओर समान।
दीप शलाका के समान ही,
जीवन का करना उपयोग।
अंतर निहित ज्ञान दीपक के,
प्रज्वलन में करो प्रयोग।

—"पीस आफ माईण्ड" से गुमाश्ता द्वारा अनुवादित

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गो रक्षा का महत्व

१. देश में प्रतिदिन ३० हजार से अधिक गायें कटती हैं, जिनकी आह से धरती भी सूख गई है और देश की अन्न समस्या हल होने में नहीं आती।

२. वस्तुतः गौ की हत्या मानवता और राष्ट्र की हत्या है।

३. गो रक्षा देश की रक्षा है।

४. गो धन का करो विकास, कोई न करे उसका विनाश।

५. गो धन देश की सम्पत्ति है, जो विपत्ति से बचाती है।

६. गो किसान का धन है. गो उन्नति का साधन है।

७. दूध की समस्या गोहत्या से विकट हो गई है।

८. गो कांग्रस का चुनाव चिन्ह है, गो देश से सर्वथा अभिन्न है।

९. गो माता पालक है, उसकी हत्या घातक है।

१०. गो भारतीय परिवार का अंग है, उसको काटना बड़ा भारी कुसंग है।

११. गऊ का मूत्र कई बीमारियों में औषधि का काम देता है।

१२. आर्थिक दृष्टि से भी गऊ उतना खाती नहीं, जितना कि देती है।

१३. गऊ का दूध मेधावी शक्ति प्रदान करता है।

१४. हैदरअली, बाबर, अकबर, हुमायूं जैसे मुसलमान बादशाहों ने भी गोहत्या बंद की थी, क्या हमारी सरकार यह हत्या नहीं बन्द कर सकती ?

१५. गोमांस भक्षण का उल्लेख कुरान में भी नहीं है।

१६. आयशा हजरत मोहम्मद साहब की धर्मपत्नी—फरमाया रसूल अल्लाह ने कि गाय का दूध शिफा है, घी दवा है और उसका मांस नितान्त मर्ज (रोग) है।

१७. मुल्ला मोहम्मद वाकर हुसैन—गाय को मारनेवाला, फलदार वृक्ष काटने-वाला और शराब पीनेवाला कभी नहीं रखा जायेगा।

१८. अल्लामा जलालुद्दीन सियुती—गाय के गोश्त में बीमारी है, उसके दूध में दुआ है और घी में सफा है।

१९. हकीम अजमलखां—न तो कुरान और न अरब की प्रथा ही गो की कुर्बानी का समर्थन करती है।

२०. रफी अहमद किदवई साहब—गोवध निषेध का प्रश्न अब दीर्घकाल तक स्थगित नहीं रखा जा सकता। जनतंत्र के सिद्धांतानुसार जनता की मांग को स्वीकार करना ही चाहिए।

२१. बाबर ने अपने पुत्र हुमायूं को एक पत्र वसीयत के तौर पर लिखा कि गाय की कुरबानी कदापि न करना।

२२. अकबर बादशाह ने सन् ९९५ हिचरी में गोकशी बन्द करने का हुक्म जारी किया था।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अध्यात्म कथा

—सत्यप्रभाकर 'अश्क'

सत्य की खोज

अपने को भुलाकर, प्रभु से दूर रहकर और सभी कुछ मिल सकता है पर शांति और आनन्द नहीं

सरिता का शान्त तट ! जल की तरंगे तट के साथ किल्लोल कर रही हैं।

उधर तट के ऊपर दो मानव प्राणी बैठे परस्पर प्रेम वार्ता में संलग्न हैं। एक पुरुष है दूसरी नारी। दोनों ही यौवन के मद में उन्मत्त हैं। दोनों के लिए जैसे यह यौवन—यह तरुणाई ही संसार की एक महान् उपलब्धि है और इसका उपभोग ही मानो मानव की सर्वोच्च सफलता है।

सुकोमल-गात नारी अपने सुन्दर चरण-तलों को बहती नदी की तरंगों से भिगो रही थी। उनके लिए यह एक विनोदमात्र था—एक सामान्य मनोरंजन मात्र ! परन्तु वह नहीं जानती थी कि उसके चरण-तल जल में जो किल्लोल कर रहे हैं, उनसे जल में एक विशिष्ट प्रकार की प्रक्रिया उत्पन्न हो रही है—ऐसी प्रक्रिया, जो मानव को एक महान सन्देश देती है। काश ! नारी और उसका प्रेमी इस सन्देश को समझ पाते।

जल में कुछ बबूले उठते थे और तत्काल अदृश्य हो जाते थे। परन्तु उन प्रेमी-पागलों का इस ओर तनिक भी ध्यान न था।

इसी समय सहसा पीछे से किसने कुछ कहा—'मूर्ख ! आंखे होते हुए भी तुम नहीं देख पाते। ये बबूले तुम्हें क्या कह रहे हैं ?—"यह संसार क्षण-भंगुर है—एक-क्षण में इसकी लीला समाप्त हो जाती हैं। अतः इसे ही सत्य मानकर अपना क्षणिक दुर्लभ जीवन व्यर्थ न गंवाओ।"

दोनों ने यह आवाज सुनी और मुड़कर पीछे की ओर देखा, परन्तु वहां तो कोई नहीं था।

दोनों खिलखिला कर हंस पड़े। वे मूर्ख यह भी न समझ पाये कि यह उन्हीं की आत्मा की आवाज है, जो प्रत्येक के भीतर विद्यमान रहती है और उसे समय-समय पर सावधान करती रहती है। परन्तु जो विवेकी मनुष्य होते हैं, वे उसे समझ लेते हैं और जिनके नेत्रों पर अविवेक का पर्दा पड़ा रहता है, वे उसे नहीं समझ पाते।

(२)

पुरुष और स्त्री ने संसार को ही सत्य मान लिया था और वे ऐहिक सुखों को ही जीवन का सार और सर्वस्व मानकर उनमें खो गए थे। परन्तु जो साध्य था—वह साधन बन कर कब तक अपना प्रभाव बनाए रखता !

मार्ग भटककर किसने सुख पाया है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कुछ वर्ष पश्चात् !

जिस नारी का शरीर सुन्दर और सुकोमल था और आकर्षण का केन्द्र था, वह आज रोगग्रस्त हो चुका था। उसे असाध्य रोगों ने घेर लिया था। उसके सुवासित होंठों में दुर्गन्ध और रोग के कीटाणु समा चुके थे। सुखदायी स्पर्श देने वाले शरीर की त्वचा अस्थियों का पिंजर-मात्र रह गई थी और उसके स्पर्श से अब पुरुष के हाथ के तलवे छिल जाते थे।

पुरुष को अब उससे घृणा होने लगी। नारी ने पुरुष से कहा—"मेरे पास आओ। मैं तुम्हारी वही प्रेम-पुजारिन हूं जिसे तुम अहर्निश अपने बाहुपाश में लिए रहते थे।"

किन्तु पुरुष पर नारी के इस आर्त्त-नाद का कोई प्रभाव न हुआ। उसे अब नारी के प्रति कोई लगाव न रह गया था। उसका प्रेम असत्य था। यह आत्मा का प्रेम नहीं था। यह प्रेम तो उस भौतिक शरीर से था, जिसका सौन्दर्य अस्थायी है, जिसका आकर्षण अशाश्वत है।

नारी चिल्लाती रही, किन्तु पुरुष ने उसकी एक न सुनी !

नारी अपनी उपेक्षा सहन न कर सकी। उसने दम तोड़ दिया।

(३)

उस नदी के किनारे, जहां दो प्राणी पुरुष और स्त्री—बैठे प्रेम-किल्लोल में मग्न थे, अग्नि की ऊंची लपटों में पुरुष का स्वार्थी प्रेम जलकर स्वाहा हो रहा था, अज्ञानी पुरुष के नेत्रों से जल का अजस्र प्रवाह बह कर तट को भिगो रहा था।

पुरुष के नेत्रों से निकले कुछ आंसू टप-टप नदी में जा गिरे और उन्होंने बबूलों का रूप धारण कर लिया।

एक बार पुनः पुरुष ने बबूले देखे। परन्तु इस बार बबूले साधारण नहीं थे। हृदय की वेदना ने नेत्रों की राह से निकल कर बबूलों का रूप धारण कर लिया था।

इसी समय पुनः पीछे से आवाज आई—"मूर्ख ! अब भी समय है। इन बबूलों को देखकर जीवन के रहस्य को समझ ले। इन बबूलों की भांति ही यह जीवन नश्वर है। संसार की प्रत्येक वस्तु नश्वर है, यदि तू अनश्वर बनना चाहता है तो उस अनश्वर प्रभु से साक्षात्कार कर, जो इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का संचालक है।"

पुरुष ने इस बार यह आवाज ध्यान से सुनी और पूछा—"कहां है वह प्रभु ?"

"सर्वत्र हैं। तुझ में भी हैं। आवश्यकता उसे पहचानने की है, सत्य को जान। अपने को खोज तुझे सब कुछ मिलेगा।

पुरुष के ज्ञान चक्षु खुल गए उसे बोध हुआ और फिर लग गया···परम प्रिय से मिलने के यत्न में। ●

'ज्ञान' द्वारा जिनके कर्म शुद्ध हैं वे ईश्वर का ध्यान करने वाले उसमें लीन रहने वाले उसको सर्वस्व मनाने वाले लोग मोक्ष पाते हैं। —गीता

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

बच्चों को उत्तम संगीत दें

प्रकाशवती शास्त्री एम. ए.

कुछ दिन पूर्व जब मेरी बहिन मीरा मुझसे मिलने आई तो उसकी बेटी अंजलि ने बड़े ही उत्तम और मनोहारी गाने सुनाए। मेरे मन में विचार आया कि आज के युग में माता का यह भी उत्तरदायित्व है कि वह अपने बच्चों को उत्तम संगीत दे। सिनेमा और रेडियो के द्वारा जिन गानों का प्रचार हो रहा है वे गाने बच्चों के मुख से सुनकर हमें बड़ा दुःख होता है पर हमने यह भी कभी सोचा है कि इसका कारण क्या है ? माताएं अपने कर्तव्य की उपेक्षा कर रही हैं। भला जो माता अपने बच्चों को उचित समय पर स्वास्थ्यप्रद और स्वादिष्ट सुन्दर भोजन नहीं खिलाती तो उसका बच्चा इधर-उधर की गन्दी स्वास्थ्यनाशक और रोगोत्पादक पदार्थ ही तो खाएगा। भरे पेट वाला तो उनकी ओर आंख उठाकर भी नहीं देखेगा।

सत्यार्थप्रकाश में स्वामी जी ने लिखा है कि माता को चाहिए कि वह अपने बच्चों को शैशवकाल में ही उत्तम-उत्तम श्लोक, कविताएं और भजन कण्ठ करवा दे। नृत्य और संगीत बच्चों की स्वाभाविक और स्वस्थ मनोवृत्तियां हैं। परन्तु आवश्यकता है उनको उचित आधार तथा उचित दिशा देने की। मेरा बेटा जब छोटा था तो मैंने उसको संस्कृत के कई श्लोक सुनाए और पूछा कि तुम्हें कौन-सा श्लोक सब से अच्छा लगता है तो उसने निम्नलिखित श्लोक पसन्द किया :—

शनैर्पन्था शनैर्कन्था शनैर्पर्वतमस्तके
शनैर्विद्या शनैर्वित्तं पंचैतानी शनैः शनैः

इसके पश्चात् मैंने उसको अन्य श्लोक भी कण्ठस्थ कराए जो उसे आज भी स्मरण हैं और मैं समझती हूँ कि यही उसके जीवन की निधि हैं।

माताओं को इस बात की धुन होनी चाहिए कि वे अपने बच्चों को नित्यप्रति अच्छे-अच्छे श्लोक कविताएं और भजन याद कराएं, सुनें, सुनाएं और कभी-कभी पुरस्कार भी दें। ईश्वरभक्ति और देशभक्ति के गानों के अतिरिक्त उन्हें प्रकृति-सौन्दर्य और आचार सम्बन्धी मनोरंजक गीत भी सिखाए जा सकते हैं। मेरे विचार में रेडियो और सिनेमा के प्रचलित उत्तम विचार वाले गीतों को भी अपना लिया जाए तो कोई हानि नहीं। परन्तु इनकी संख्या सीमित और संयमित ही होनी चाहिए।

इसके अतिरिक्त त्योहारों, उत्सवों के लिए भी बच्चों को विशेष-विशेष गाने सिखाने चाहिएं। जिससे बच्चों की इनमें रुचि बढ़े और ऐसे अवसरों पर बजने वाले

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रिकार्डों को प्रोत्साहन न मिले। स्वामी सत्यानन्द जी कहा करते थे कि प्रत्येक बच्चा संगीतज्ञ तो नहीं बन सकता परन्तु उचित अवसरों पर गाने के लिए विशेष-विशेष गीत अथवा भजन अवश्य सीख सकता है। बालिकाओं को विवाहादि अवसरों पर गाने सिखाने पर वे विशेष बल दिया करते थे।

प्राचीन रुढ़ियों में पली माताएं ऐसे अवसरों पर कुछ अज्ञानतापूर्ण गीत गाया करतीं थी कहीं-कहीं अब भी गाती हैं वे अनुचित प्रतीत होते हैं उनको तो हमने हटा दिया पर उनके स्थान पर उत्तम गानों का प्रचार नहीं किया अतः वे अवसर पर तो फीके लगते हैं या उनके स्थान पर रिकार्ड अथवा भंगड़ें आदि का प्रचार प्रारम्भ हो गया है।

स्मरण रखिए केवल बुरे कर्म को हटाना ही पर्याप्त नहीं होता उसके स्थान पर अच्छा काम भी स्थापित करना आवश्यक होता है अन्यथा उसका स्थान कोई दूसरा बुरा कर्म ले लेता है।

आज संगीत की जो दुर्दशा हो रही है वह किसी से छिपी नहीं। छोटे-छोटे बच्चों के मुख से वासनाभरे गीत सुनकर कानों में उंगली डालनी पड़ती है पर ऐसे तो काम न चलेगा। मेरी तो आज की विदुषी आर्य-माताओं से प्रार्थना है कि वे अपने बच्चों को उत्तम संगीत देकर उनको पथभ्रष्ट होने से बचाएं तथा समाज के दूषित वातावरण को वेदमन्त्रों की पवित्र ध्वनि से गुंजायमान करें, उत्तम भजनों के द्वारा बच्चों के मुंह से ईश्वर-प्रेम देश-प्रेम और अन्य उत्तम विचारों की सुगंधी को फैलाएं।

दरिद्र नारायण

प्रभु की करुणा का पार नहीं।
वह विश्व-जगत-भर
उलट-पुलट यों करता है
जिससे आत्मा केन्द्रस्थ बने।
उसकी जय हो।
मैं अभी, यहाँ हूँ इतना खुश
जितना न कहीं पर
कभी रहा;
इसलिए कि सुख का सदन
नहीं है कोई महल,
हैं सुख-निधान तो चरण-कमल।
तृष्णा कोई भी नहीं मुझे;
मिल गयी मुझे उसकी करुणा।
जो त्यक्त, बुभुक्षित, पीड़ित हैं
तू प्रेम और निष्ठा से
उनकी सेवा कर;
वे चरण
कमल हैं
उनकी धूलि शीश पर धर।

—साधु टी० एल वारवानी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चुटकी भर राख

एक राजा के यहां दो ब्राह्मण रहते थे। उनमें से एक विद्वान् था तथा दूसरा मूर्ख। राजा विद्वान् का आदर मूर्ख से अधिक करता था। इसलिए मूर्ख मन ही मन कुढ़ता रहता था। जब यह बात राजा के कानों तक पहुंची, तो उसने मूर्ख को बुलाया और उसे चुटकी भर राख देकर एक मित्र देश के राजा को दे आने को कहा।

मूर्ख ब्राह्मण उस मित्र देश के राजा के हाथ में वह चुटकी भर राख रखकर बोला, "महाराज, हमारे राजा ने यह आपके लिए भेजी है।"

राजा ने पूछा, "यह राख कैसी है?"

मूर्ख ब्राह्मण उलझन में पड़कर बोला, "महाराज, यह तो मुझे मालूम नहीं।"

यह सुनकर मित्र देश के राजा ने मूर्ख को धक्के देकर निकाल दिया और अपने मन्त्री से कहा, "मन्त्री, राजा ने जानबूझकर हमारा अपमान किया है। तुम शीघ्र सेना लेकर उसपर चढ़ाई की तैयारियां करो।"

जब यह बात पहले वाले राजा के पास पहुंची, तो उसने तुरन्त विद्वान् ब्राह्मण को बुलाया और उसी तरह उसके हाथ में राख की चुटकी देकर कहा कि उस राजा को दे आओ।

विद्वान् ब्राह्मण ने एक चांदी का थाल मंगवाया। उसपर बहुमूल्य रूमाल बिछाकर उसे भांति-भांति के फूलों से सजाया। इसके पश्चात् बहुत सुन्दर सोने के एक पात्र में उस राख को रखकर आदर के साथ मित्र देश के राजा के पास ले गया। पहले कुछ श्लोक पढ़कर उसने राख की महिमा का बखान किया, फिर पात्र उठाकर राजा के पास रख दिया।

राजा ने पूछा, "यह क्या है?"

विद्वान् ब्राह्मण बोला, "हमारे महाराज ने एक बहुत बड़ा मङ्गल-यज्ञ किया है तथा यज्ञ-अवशेष आपके लिए भेजा है। आप इसे स्वीकार कीजिए।"

यज्ञ का अवशेष जानकर राजा ने उस पात्र को सिर नवाया और उसे पवित्र स्थान पर रखवा दिया। फिर उसने विद्वान् ब्राह्मण से पूछा, "हमारे पास एक अन्य व्यक्ति भी तो यह लाया था।"

पंडित बोला, "राजन्, वह कोई मूर्ख होगा। हमारे महाराज ने तो केवल मुझे ही भेजा है।"

पंडित की बातों से राजा बहुत प्रभावित हुआ। उसने कहा, "अच्छा हुआ आप आ गए, नहीं तो हम आपके महाराज से बहुत रुष्ट थे।"

इतना कहकर राजा ने बहुत-सा धन देकर पंडित को विदा किया और राजा को यज्ञावशेष भेजने के लिए धन्यवाद दिया।

अब पहले वाले राजा ने उस मूर्ख ब्राह्मण को बुलाकर कहा, "देखा, तुमने मित्र देश के राजा को हमारा विरोधी बना दिया था। इस पंडित ने जाकर उसे प्रसन्न कर लिया है। हमारे पास राजा का पत्र आया है, जिसमें विद्वान् ब्राह्मण की बहुत प्रशंसा की गई है।"

यह सुनकर मूर्ख ब्राह्मण ने आंखें नीची कर लीं तथा बहुत लज्जित हुआ।

—हरपालसिंह 'पाल'

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इन्फ्लुएंजा, नजला, जुकाम, खाँसी

स्व० पं० ठाकुरदत्त शर्मा वैद्य (अमृतधारा), के अनुभूत प्रयोग

आजकल बहुत लोग इसकी शिकायत करते आते हैं। देखा यह गया है कि विरुद्ध चिकित्सा से अधिक समय तक कष्ट उठाते रहते हैं और कभी तो रोग को बढ़ा भी लेते हैं। यदि साधारण सी सावधानी की जावे तो अतिशीघ्र स्वास्थ्य प्राप्त हो सकता है।

जब किसी को भी जुकाम हो तो उसको कोई ऐसी औषधि नहीं खानी चाहिए जिससे जुकाम रुक जावे। आजकल जो तत्काल आराम देने वाली औषधियां चल रही हैं—वे साधारण लोग बिना किसी से परामर्श लिए स्वयं ही बजार से मोल लेकर सेवन कर लेते हैं। किन्तु उत्तम यह है कि वह कोई औषधि न खरीदें, न ही सेवन करें और तीन दिन तक प्रतीक्षा करें। जुकाम को बहने दें। तीन दिन में आराम आ जावेगा। हां, सावधानी आवश्यक है जो कि हम लिख देते हैं :—

सिर को गर्म रखो। पानी ठण्डा न पीयो, गर्म पियो। दूध, घी तथा मक्खन बन्द कर दो। यदि हो सके तो भोजन भी बन्द कर दो। यदि भूख लगती है तो बेसन, गेहूँ की रोटी मधु (शहद) के साथ खावें। रात्रि को सोते समय गर्म-गर्म पानी घूंट-घूंट करके पी लिया करें। तीन दिन के भीतर नजला, जुकाम पूर्णतया जाता रहेगा।

यदि कफ अधिक और सर्दी तीन दिन में समाप्त नहीं हुई और नजला-जुकाम के अतिरिक्त कुछ खांसी भी आरम्भ हो गई है तो निम्नलिखित औषधि दो, तीन दिवस में आराम देगी। इसे आरम्भ से भी सेवन कर सकते हैं यदि रोग अधिक है या थोड़ी मात्रा में ज्वर भी है :—

तुलसी के पत्र ११, दालचीनी ६ माशा, काली मिर्च ५, इलायची छोटी ५, पीपल १, मुलठ्ठी ३ माशा। डेढ़ पाव पानी में उबालें। जब आधा पाव पानी रह जावे तो मल छानकर छटाँक, दूध और इच्छानुसार चीनी मिला कर चाय की भांति प्रातः सायं पीयो। यदि कब्ज हो तो ६ माशा बनफशा भी शामिल कर लिया जावे।

यदि फ्लू (इन्फलुएंजा) का रोग फूट रहा हो और एक दम नजला-जुकाम के साथ ज्वर और शरीर में पीड़ा एवं थकावट-सी प्रतीत हो तो निम्नलिखित काढ़ा अत्युपयोगी सिद्ध होता है :—

मुलठ्ठी, फूल बनफशा, पुष्करमूल, जूफा, गाजबान, खतमी, खबाजी प्रत्येक ३ माशा, लहसूडियां ९, मुनक्का ७, उनाब ७ उसी प्रकार काढ़ा बनाकर चाय की भांति दो-तीन बार दिन में प्रयोग करें।

साधारण इन्फ्लुएंजा में यदि केवल मधु और अदरक का रस थोड़ा-थोड़ा दिन में दो-चार बार चाटें तो भी शीघ्र आराम आ जावेगा। घबराऐं नहीं। अपनी सादी वस्तुओं पर पूर्ण विश्वास करें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मां और बेटा

एक दिन रंगून के टाउन हाल में भारतीयों की एक बड़ी भारी सभा हुई। ये वे दिन थे जब रंगून पर बमबारी हो रही थी। नेताजी ने अपने भाषण में उपस्थित भारतीयों से देश की आजादी के लिए सर्वस्व त्याग की अपील की। इस पर अनेक लोगों ने धन देना आरंभ किया। औरतों ने अपने जेवर तक उतार कर दे दिए। इतने में एक ओर से आवाज आई—"नेताजी, मुझ गरीब की भी एक भेंट है। मैं दूध बेचने वाली गरीब औरत हूं। मेरे पास धन नहीं है हां, मैं अपना यह बच्चा (एक युवक की ओर इशारा करके) भारत माता की स्वतंत्रता के लिए प्रस्तुत करती हूं। आपने सर्वस्व मांगा है, और यही मेरा सर्वस्व है।"

नेताजी ने उस २२ वर्ष के नवयुवक को गले लगाया, उसकी बुढ़िया मां को प्रणाम किया और कहा, "तू धन्य है, माता। जहां तेरी जैसी महान् आत्माएं हों वह देश स्वतंत्र होकर ही रहेगा।" उस दूध बेचने वाली बुढ़िया लक्ष्मी गोरखा का वह पुत्र इम्फाल के मोर्चे पर बड़ी वीरता से लड़ता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ। युवक की मौत पर नेताजी ने लक्ष्मी को अपने हाथ से पत्र लिखा था—"धन्य है वह मां, जिसका पुत्र देश की स्वतंत्रता के लिए बलि हो गया। भारत माता तुम पर गर्व करेगी।"

इसी वृद्धा लक्ष्मी गोरखा के पुत्र मानबहादुर और उसके साथियों के बलिदान की कहानी बड़ी मार्मिक है :

इम्फाल के मोर्चे पर भारतीयों की हार हुई थी। टांजी के मोर्चे पर मौजूद नेताजी आगे के बारे में सोच रहे थे। उन्हें अपने विश्वस्त गुप्तचर से समाचार मिल चुका था कि टांजी को अमरीकी और ब्रिटिश टैंक उड़ाने ही वाले हैं। नेताजी को उदास देखकर छह भारतीय नवयुवक—जिन में चारसिख और दो गोरखा थे—उनके पास आए और उनसे उदासी का कारण पूछा। इन छह जवानों—अमरसिंह, हरजीतसिंह, खजानसिंह, प्रीतमसिंह, जंगबहादुरसिंह और मानबहादुरसिंह (वृद्धा लक्ष्मीका पुत्र) को नेताजी ने बताया कि टांजी को उड़ाने का प्रबंध हो

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चुका है। उन छह वीरों को कोई घबराहट न हुई और सबने एक स्वर से अपने देश की स्वतंत्रता के लिए सब कुछ बलिदान करने का नेताजी को विश्वास दिलाया।

खजानासिंह का सुझाव था कि जो तीन सड़कें टांजीकी ओर आती है, और जिनकी ओर से अमरीकी और ब्रिटिश टैंकों को टांजीपर आक्रमण करना था, उड़ा दी जाएं। सभीने उसकी बात का समर्थन किया। टांजीकी ओर आने वाली सड़कों की दो दो मील की दूरी पर दो-दो गड्ढे खोदकर दो-दो बमों के साथ सड़क के दोनों ओर एक-एक व्यक्ति बैठ गया। जब तीनों ओर से हमला करने टैंक आए, तो पहले टैंक के आते ही बम फट गए और तीनों ओर का रास्ता टूट गया। लेकिन छहों भारतीय युवक मारे गए। टैंकों को चलाने वाले आधिकारी भी घायल हुए। ब्रिटिश सेना के मुख्य कार्यालय में वायरलेस से समाचार पहुंच गया कि और टैंक न भेजे जाएं, रास्ता तीनों ओर से टूट गया है। बम फटने के बाद अपने बहादुरों की लाशों को लाने के लिए नेताजी स्वयं उन स्थानों पर गए और हरेक लाश से लिपट कर रो पड़े।

वीरगति पाने वाले इन जवानों में वृद्धा लक्ष्मी का पुत्र मान बहादुर भी था। उस वीर पुत्र की माता की साहस-की कथा भी इतिहास में स्वर्ण अक्षरों से लिखने योग्य है :

वृद्धा मां ने अपने पुत्र मानबहादुर का एक चित्र सोने के फ्रेम में लगवा कर अपने कमरे में लगा रखा था। उसने अपनी सारी संचित पूंजी इसपर लगा दी थी। इधर नेताजी को पुनः धन की आवश्यकता हुई। इसके लिए नेताजी को सोने से तोलने का निश्चय किया गया। रंगून में एक विशेष समारोह मनाया गया। जो सोना एकत्रित किया गया था वह नेताजी की तोल के लिए कम पड़ रहा था। वृद्धा से यह देखा न गया और वह घर जाकर अपने पुत्र की तसवीर को तोड़कर सोने के फ्रेम को ले आई और उसने उसे तराजू के पलड़े में रख दिया। वजन पूरा हो गया। नेताजी यह देखते ही तराजू से नीचे उतर आए और कहने लगे—"यह तुमने क्या किया, मां, अपने वीर बच्चे की तसवीर का फ्रेम तुमने तोड़ दिया!" इसपर वृद्धा ने कहा—"यह सोना मेरे बच्चे से अधिक मूल्य का नहीं। यदि मां का दिल अपने बच्चे को स्वतंत्रता की बलिवेदी पर अर्पण कर सकता है, तो सोना कोई कीमत ही नहीं रखता।"

—पो. के. हरिवंश

शाही मेजबान के यहां फकीर मेहमान !

जब गाँधी जी इंग्लैंड के बादशाह के मेहमान बने। काश, कि हम अपने स्वरूप को न भुलाने की सीख लेते—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

एकता-गीत

एकता हुई जहां, सुख वहीं समा गया !
लहर मिल के बह रही, नाम सिंधु पा गया !!
झुंड बांधकर किरन, ज्योति सब जगह भरे,
नाम सूर्य का हुआ, काम रोशनी करे,
मिल के जो चला जहां, वह सफलता पा गया !
एक-एक धूलि कन, मिल के खेत बन गये,
जिन पे फस्ल झूमती, रूप धर नये-नये,
रंग स्वाद एक संग, फूल फल में आ गया !
मेघ भी उमड़-घुमड़, संग घिर के छा रहे,
शक्ति तभी मेल की, धार में वे पा रहे
बूंद को अलग-अलग, कब बरसना भा गया !
बजते साज हैं, तभी जबकि सुर का मेल हो
मन मिले बिना कहीं, प्रेम का न खेल हो
पांत बांध जो चला, राह वह चला गया !
संग जोड़ जो चला, मंजिलें चला गया !!

—सुमित्राकुमारी सिन्हा

ओ विप्लव के थके साथियो !

ओ विप्लव के थके साथियो,
विजय मिली विश्राम न समझो !
उदय प्रभात हुआ फिर भी तो
छायी चारों ओर उदासी ।
ऊपर मेघ भरे बैठे हैं
किन्तु धरा प्यासी की प्यासी ॥
आहत अन्तर के पल-भर की,
राहत को, आराम न समझो !
पद लोलुपता और त्याग का
एकाकार नहीं होने का ।
दो नावों पर पग रखने से
सागर पार नहीं होने का ॥
जब तक सुख के स्वप्न अधूरे,
तब तक पूरा काम न समझो !
तुमने वज्र प्रहार किया था
पराधीनता की छाती पर ।
देखो आंच न आने पाये
जन-जन की सौंपी थाती पर ॥
युगारम्भ के प्रथम चरण की,
गतिविधि को परिणाम न समझो!
ओ विप्लव के थके साथियो,
विजय मिली विश्राम न समझो!!

—बलवीरसिंह 'रंग

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

Based on Satyarthprakash CHAPTER III)

Base of Education

—Ganpat Rai Talwar

The ideal behind education as mentioned at the end of the last chapter is to make real men of them by adorning their children with good sound education which would provide them with nobility of character and training for good actions during their life time, mental and spiritual.

Ornaments cannot make the men—they rather make them vain and liable to danger from bad characters. Real adornment is adornment of the soul through mental, intellectual and spiritual training.

The best system is that of Residential Institutions where children of 8 years or more must compulsorily be sent to the preceptors for higher education. Any dereliction in that connection must be legally punishable.

One thing is definite that there should be no "co-education". Educational Institutions must be separate for boys and girls (with exclusive staff of women for girls and men for boys).

Greatest care must be taken in the selection of teachers. They must be of known sterling character and having requisite qualifications.

It is understood that there must be perfect equality in the treatment of the inmates of any institution or admission there. No consideration of the caste or creed, sex, rich or poor parents must have a bearing on such treatment.

The students must be made to live hard, disciplined life, which will stand them in good stead in facing the problem of life when they enter the married life and social life (or the life of a citizen of their country) in any capacity.

Hard, disciplined life is what is conveyed by the word "Brahmacharya" (control over the local self). This will result in a strong physical, mental, moral and spiritual life—a happy augury for a highly successful career. Besides the usual curriculum of studies, for which the institutions cater the following studies must form the essential teachings for the children of all ages.

(a) To study and teach others must become a habit never to be given up under howsoever circumstances, favourable or adverse. This must become a part of our daily life.

(b) Human culture must be thoroughly understood to save the society from disintegration. It is the same for all human beings of whatever clime country or prace. It is composed of five characteristics or fundamentals and is the first step of the Eightfold Yoga or communion of the great Patanjali's Yog Shastra. These fundamentals must become thorougely saturated in the life of the individual for the peace and prosperity of the entire human race.

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

1. **Non violence.** (Ahinsa)

The growth of the human beings and the society can only be assured in a nonviolent atmosphere. Even the very idea of the growth or culture would be impossible if there is no peace in the land. No Government can run if the law of the jungle prevails on all its thorough fares, if people cannot travel in security, if they cannot sleep in security and if there is fear lurking around the corner while carrying on one's peaceful avocation. Non-violence, therefore is the basic principle for any progressive society which gives birth to cultured citizens.

This non-violence, however, is not to be confused with the non-violence of the weak, the timid or the important but non-violence of the strong, who knows when and where to strike but whose violence is primarily to maintain the non-violent atmosphere without which there can be no peace.

A cultured individual must be non-violent in thought, word and deed in his every day behaviour among the members of his family, the Society or the State.

It is obvious, there can be no growth in a turbulent state, chaotic society, or a family where violent spirit reigns supreme.

2. Truth (Satya). No social fabric can exist without this fundamental in its making.

Truth is the fundamental of religion.

3. Non-Stealing (ASTEYA)

This attribute is there on the statute book of all states- Robbing is a crime but like non-violence and truth, it is there for those who are caught but its practice, otherwise goes unchecked from top to bottom. Corruption, bribery, blackmarketing are rampant everywhere and one vainly looks for a place completely free from the virus of feeling.

4. Brahmacharya (Sex morality)

This means a purity of outlook in its widest sense and particularly purity of sex.

5. Non-hoarding (Aparigraha)

In every economic upsetting the with-holding of currency from circulation is always found to be the main cause.

These are five social laws and are the back-ground for any every individual good or merit that one would like to have or can ever have.

According to Patanjali's Yog Shastra, five individual laws that constitute the individal character are :—

1. Purity—Physical and Moral
2. Contertment
3. Discipline
4. Self Study
5. Faith in God

A little consideration will testify to the fact that no individual good can ever exist without the social laws being there woven in the fabric of the society.

Students must be made to vividly realise that **human body** is the vehicle of the soul, **senses** are the horses that pull the vehicle to its desired end.

Mind is the reins that hold the horses in check.

Intellect is the driver who guides the reins and keeps the

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

vehicle on proper paths leading to health, happiness and prosperity.

Human soul is the owner of the vahicle and needs to be quite wide awake and alert to make the best of the vehicle and enjoy the thrills of life for which the entire system is set.

All the components have to be strong and healthy to lead the vehicle to its destined end.

The preceptors or teachers are expected to give the following advice to their students :—

Always speak the truth.

Do the right.

Execute your studies with a will and without the least negligence or indifference.

Live a pure celibate life till you are of marriageable age and intend to marry.

Never give up the habit of reading and honest labour to earn wealth and prosperity.

Never neglect your health or the path to your welfare.

Always respect and serve your parents and other and elders behave towards the as to words the learned great.

Ever cultivate with vigour and skill or talent you possess.

Love virtue and shun vice.

Follow only what is good in us and not our weaknesses.

Keep the company of the good and learned people.

Give—give in faith or even without faith. Give out of fear, out of shame, and in keeping up your word.

When in doubt go to the learned ones, and act as they do.

Follow the dictates of the Vedas. Those who aspire to wisdom and right actions must needs go to the Vedas for guidance.

Every individual has a right to the highest education that can be made available according to the merits of each.

It is an admitted fact that Vedas are the oldest books in the Library of the world. They were there even when all the known prominent religions or faiths never existed.

Vedas thus are not the monopoly of any Sect. They are the books of knowledge and learning and belong verily to those who read them and try to understand **them and try to understand** their **true meanings.**

Rishi Daya Nand in the present age, when the originals of Vedas had almost become unavailable and due to the differences in the various translations a lot of confusion existed regarding their meaning and the European scholars had added to that confusion, was the only person to have found the key to the translation of the Vedas.

Shri Arvindo Ghosh mentions in his books that the greatest good Rishi Daya Nand had rendered to humanity is to have re-discovered the key and thus opened out the gates of the fountain head of knowledge.

Upanishads, which are spiritually based on Vedas are venerated for the deep learning that they make available to their readers.

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

Darshanas, the six systems of philosophy have characterised by the western scholars one and all point to the Vedas as the sole authority for solving any problem of any difference of outlook as between various thoughts regarding religion.

There is no difference in the ideology of the six darshanas. These are explanations of various aspects of knowledge. They all say with one voice that Vedas are the sole authority behind the world problems.

As the oldest books of knowledge it is of advantage to the world to make thorough research into the truths given in the Vedas.

It is for this reason that it is provided in the Code of Education and its syllabus that students must be given full advantage of the high thoughts promulgated by the Vedas.

It is laid down that the truth of everything that is learnt or taught should be carefully examined by the following five tests :—

1. All that conforms to the attributes of God and the teaching of Vedas is Truth.

2. All that tallies with the laws of the Nature is truth. All that is against the laws of the Nature is wrong and untrue.

3. Truths adumbrated by pious truthful and impartial, unselfish learned may be considered as acceptable.

4. As revealed by one's own soul viz. all that is considered good for me may be good for others also and my behaviour must conform to that principle.

5. Eight "Pramans" or tests laid down by Nyaya Shastra and other Shastras for arriving at truth.

These 8 "Pramans" (tests) i.e. evidence of authority may be briefly described as under.

First testimony is Pratyaksh (Direct Cognisance). It is the knowledge which is the result of direct contact of the senses with the sense objects, free from all elements of doubt.

Second Inference (Anuman). Literally it follows direct cognisance-cause and effect or vice versa whtch can directly be traceable to causes like smoke due to fire.

Third is analogy (Upman). The knowledge of a thing from its likeness to another, means to an end, an end to the means.

Fourth is Shabd. The word of an impartial specialist or an expert in the particular subject matter.

Fifth is Itihas. The history of a nation or the biography of a person as an explanation of cause and effect.

Sixth is Arthapatti. Conclusion and deduction from a fact. Rain due to clouds. There could be no rain without clouds.

Seventh is Sambhav. Manifest possibility. Anything that runs counter to the laws of Nature is not possible.

Eight is Abhava. Negation or absence of the object.

These are generally taken as five by including deduction, possibility and negation under inference.

The above are essentials in general which must form the basis of all education. In addition the students must be trained to shirk from bad company, alcholic and other intoxicated drinks, too much of food, lack of exercise, lack of faith in God and his Law.

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

॥ ओ३म् ॥

विजय का स्रोत

प्रतिमास पाठक इसी प्रकार एक वेद मंत्र की व्याख्या 'जन-ज्ञान' में पढ़ेंगे। यह लेख ट्रेक्ट रूप में पृथक भी छपा है। मूल्य १ रु.) सैकड़ा भेजकर मंगाएं। —संपादक

CC-0. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विजय का स्रोत

ऋषिः—गाथिनो विश्वामित्रः, देवता—अग्निः, छन्दः—उष्णिक् ।

ओ३म् तन्त्वा विप्रा विपन्यवो
जागृवांसः समिन्धते ।
हव्यवाहममर्त्यं सहोवृधम् ॥ (ऋग्वेद ३ । १० । ६)

Tantvaa Vipraa Vipanyavo
Jagṛvaansah Samindhate
Havyavaahamamartyam Sahovṛdham

पदपाठः तम् । त्वा । विप्राः । विपन्यवः । जागृवांसः ।
सम् । इन्धते । हव्यऽवाहम् । अमर्त्यम् ।
सहःऽवृधम् ।

अभिगमः १. तम् Tam=उसको, Him
२. त्वा Tvaa=तुझे (तुम्हें), Thou (you)
३. विप्राः Vipraah=(विप्+र अथवा वप्+र)

Nominative Pl. of Vipra. (Vip+Ra or Vap+Ra) 'vip' or 'vep' means to trouble, shake, shiver, vibrate, quiver, be stirred, [Caus] 'Vipayati' or 'Vepayti (meaning to Cause to tremble or move, shake, agitate.

[Lat. VIBRARE; Goth. WEIPAN; Germ. WIFEN, WEIFEN; WIPFEL; Eng. WHIFFLE.] —M. W.

मौनियर विलियम्स ने अंग्रेजी शब्द 'Whiffle' को संस्कृत के 'विप्' शब्द से उद्धृत या सदृश बतलाया है । इस सम्बन्ध में वेब्स्टर की टिप्पणी देखिएः—

(i) WHIP=Akin to D. Wippen; to shake, to move up or down and L. Vibrare, to shake. See Vibrate)

(ii) VIBRATE=(L. Vibratus P. P. of Vibrare to shake, brandish, vibrate, akin to Goth. WEIPAN to Crown, A. S. WIPIAN to wipe...Skr. VEPATE, he Trembles.

इस रूप में वेब्स्टर के अनुसार वेपते का अर्थ हम 'vibrate' या whip" दोनों ही ले सकते हैं । इससे संस्कृत के 'टुवेपृ कंपने' का अर्थ जो अब बहुत ही संकुचित होकर केवल "कांपना" रह गया है, लेटिन और गाथिक आदि भाषाओं के बनते समय कितना विस्तृत था, स्पष्ट हो जाता है । वेब्स्टर के अनुसार अंग्रेजी की इन दोनों क्रियाओं का अर्थ देखिए :—

(i) VIBRATE—to swing or move, to brandish, to throw, cast or launch; to mark or measure by oscillation; to oscillate; to thrill, to throb.

(ii) WHIP—to move, to take, pull, snatch, jerk, or the like suddenly and forcibly; to force, urge, or drive by whipping; to make or bring out by or as by striking with a whip, as to

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

whip oneself holy; to gather together or to hold together for united action, in the manner of a party whip; to defeat...to start, turn, go, pass or the like quickly or suddenly.

'विप्' का अर्थ हुआ—कांपना; प्रेरित, अनुप्राणित, उत्तेजित, आन्दोलित, गतिमान् होना या करना; फेंकना; प्रारम्भ करना; नियमित गति द्वारा मान निश्चित करना; परास्त करना; चलने के लिए बलात् विवश कर देना; कशाघात या उस जैसी ही अन्य प्रणोदन क्रिया द्वारा स्वरूप में ले आना, किसी संगठित कार्य करने के लिए सबको एकत्र करना, एक साथ ले चलना, नम्र होना और अनुशासन में रखना।

टि०—दूसरे शब्दों में पाणिनिमुनि का 'कम्पने' केवल शारीरिक या बाह्य न रहकर बुद्धिगत, भावगत, विचार गत, मनोगत, प्राणगत, इन्द्रियगत, शरीर के सभी अंगों के नियमित या अनियमित, सहसा, किसी उद्देश्य या प्रयोजन से सभी प्रकार के लघु और गम्भीर कंपनों तथा व्यक्ति, समाज और राष्ट्र पर होने वाले उनके परिणामों को भी अन्तर्गत कर लेता है।

"विप्र" वह है जिसमें उपर्युक्त अर्थों से संलक्षित गुण, कर्म और स्वभाव हों।

A person, who possesses the merit, action and nature enunciated by above given meanings of "WHIP" or "VIBRATE" is "VIPRA".

कुछ विद्वान् "विप्र" शब्द को "वप्" 'धातु से भी बतलाते हैं जिसका अर्थ है "बोना।" उस अवस्था में विप्र वह हुआ जो अपने धर्म, ज्ञान, शक्ति और संस्कारों का बीज दूसरों की मनोभूमि में बोने की सामर्थ्य रखता हो अर्थात् जो अपनी शक्ति और ज्ञान का विस्तार करता जाए।

४. विपन्यवः Vipanyavah—'वि' 'पन्' से यह शब्द बना है। "पणस्तुतौ" धातु से निकले इस शब्द का अर्थ होगा जो स्वाभिमानी हो, स्तुत्य हो, स्तोता हो, प्रशंसक हो, सदाप्रसन्न हो, उत्साही हो, अद्भुतकर्मा हो।

VI+PAN—to pride one's self; (Noun) praising, advising, rejoicing, exulting, wonderful, admirable.

५. जागृवांसः Jaagrvaansah —जागृत, सावधान रहना, ध्यान देना, इरादा रखना, अधीक्षण; अग्नि के समान जाज्वल्यमान रहना, जगाना, साक्षी होना ये 'जागृ' धातु के अर्थ हैं। देखिये मौनियर विलियम्स—

Jaagr means to be awake or watchful, to watch over, be attentive or intent on, care for, provide, superintend, to go on burning (as fire), to be evident (caus.) to awaken [L. VIGILO]

६. सम्+इन्धते, Sam+Indhate—

'सम्' उपसर्ग, पूर्णता, एकीभाव, तीव्रता, सम्यक्ता को व्यक्त करता है। 'इन्ध्' का अर्थ है प्रदीप्त करना।

'Sam' expresess union, thoroughness, intensity, and completeness. 'Indh' means kindling, lighting, to blaze.

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

७. हव्यवाहम्, Havyavaaham—हु+यत्=हव्यम् । हव्यं वहति=हव्यवाट् ।

समर्पित वस्तु को ले जाने या स्वीकार करने वाले को ।

to Him Who carries or accepts Havyam (offerings).

८. अमर्त्यम्, Amartyam—न मरने वाले को ।

Him Who never dies, is Immortal.

९. सहोवृधम्, Sahovṛdham.

'सह्' से सहस् बनता है । 'सह्' का अर्थ है अभिभूत करना, विजयी होना, सफल होना, दमन करना, अधीन करना, संयम करना, समर्थ या योग्य होना, सहन करना, विरोध करना, धैर्यशील होना । "सहस्" को बढ़ाने वाले को अथवा 'सहस्' से बढ़ने वाले को ।

"Sahas" is derived from the root 'Sah' which means to prevail, be victorious, to overcome, to vanquish, gain, to master, suppress, restrain, to be able to, or capable of, to bear up against, resist, withstand, put up with, endure, suffer, tolerate, to be lenient towards, have patience with anyone.

Him, Who increases 'Sahas' i.e. the above qualities.

महर्षिः दयानन्दः

(तम्) सर्वविद्याप्रकाशकमनूचानम् (त्वा) त्वाम् (विप्राः) मेधाविनः (विपन्यवः) विशेषेण प्रशंसिताः (जागृवांसः) अविद्यानिद्रात उत्थिता विद्यायां जागरूकाः (सम्) (इन्धते) प्रदीपयन्ति । (हव्यवाहम्) दातव्य-विज्ञानप्रापकम् (अमर्त्यम्) मर्त्यस्य स्वभावराहित्येन देवस्वभावम् (सहोवृधम्) यः सहसा बलेन वर्धते बलस्य वर्धकं वा ।

भावार्थः—विद्वांस एव विदुषां श्रमं ज्ञातुं शक्नुवन्ति नेतरे, विद्वांसो विदुष एव सत्कुर्वन्तु न मूढानिति ॥

सायणाचार्यः

हे अग्ने ! विप्राः स्तुतीनां प्रेरकाः जागृवांसः अग्निहोत्रादिकर्मण्यप्रमत्ततया प्रबुद्धाः । विपन्यवः । विपन्युशब्दो मेधाविनमाचष्टे ।···विपन्यवो मेधाविनः स्तोतारः हव्यवाहम् हव्यानां वोढारम् अमर्त्यम् मरणधर्मरहितम् सहोवृधम् सहसा मथनरूपेण बलेन वर्धमानं तादृशं त्वा त्वां समिन्धते सोमाज्याद्याहुतिभिः सम्यग्दीपयन्ति ।

वेदाद्वेदः प्रसिध्यति

१. (विप्रो) होता, उषर्बुधः ॥ १.१४.९. ॥

२. सभेयो विप्रो भरते मती धना ॥ २.२४. १३ ॥

·····ब्रह्मणस्पतिः ।

३. प्रत्यग्निरुषसश्चेकितानो ऽबोधि विप्रः पदवीः कवीनाम् ।
पृथुपाजा देवयद्भिः समिद्धो अपद्वारा तमसो वह्निरावः ॥ ३.५.१. ॥

४. देवया विप्र उदियर्ति वाचम् ॥ ३.८.५ ॥

५. विप्रो यज्ञस्य साधनः ॥ ३.२७.८ ॥

६. वाजी विप्रः कविशस्तः सुदानुः ॥ ३.२९.७ ॥

७. स विप्रश्चर्षणीनां शवसा मानुषाणाम् । अति क्षिप्रेव विध्यति ॥
४.८.८ ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

८. वेपिष्ठो अङ्गिरसां यद्ध विप्रो मधुच्छन्दो भवति रेभइष्टौ ॥
६.११.३ ॥

९. वेद यस्त्रीणि विदथान्येषां देवानाम्···अर्य एवान् ॥ ६.५१.२ ॥

१०. विप्रो मन्मानि दीर्घश्रुदियर्ति ॥ ७.६१.२ ॥

११. गीर्भिर्विप्रः प्रमतिमिच्छमान ईट्टे रयिं यशसं पूर्वभाजम् ॥ ७.९३.४ ॥

१२. उपह्वरे गिरीणां सङ्गमे च नदीनाम् । धिया विप्रो अजायत ॥
८.६.२८ ॥

इस मन्त्र का देवता अग्नि है और ऋषि विश्वामित्र हैं। अर्थ यह हुआ कि जो इस मन्त्र का साक्षात्कार कर लेगा, इसके अर्थको समझकर इसके अनुसार अपने कर्म वचन को सुधार लेगा, वह भी विश्वा मित्र बन जाएगा अर्थात् संसार में कोई भी उसका शत्रु नहीं रहेगा और जहां वह सबका प्यारा हो जाएगा सब उसके प्यारे होंगे। हर एक मन्त्र में ऋषि शब्द का अर्थ हम यही ले सकते हैं; और अग्नि देवता इस बात का प्रतिपादक है कि इस मन्त्र में अग्नि को ही मुख्य मानकर उसके बारे में कहा गया है। अग्नि का अर्थ केवल भौतिक अग्नि नहीं है अपितु अग्नि के अर्थ वेदों के अनुसार अनेकों रूपों में लिए जा सकते हैं। विद्वान् अग्नि है, किसी राष्ट्र का राजा अग्नि है, शरीर में प्राण अग्नि है, बादलों में बिजली अग्नि है और इसी प्रकार जो भी प्रेरणा देनेवाली, रूप देने वाली वस्तु है, तत्व है, उसको हम अग्नि के नाम से कह सकते हैं। इसी के अनुसार परमात्मा भी अग्नि है और आत्मा भी अग्नि है।

मन्त्र की विशेषता देखिए। इसमें कोई विशेष नाम लेकर या कोई विशेष बात लेकर भी प्रतिपादन नहीं किया गया कि केवल विद्वान् का ही अर्थ बोध हो या परमात्मा का ही या आत्मा का ही। ऐसे सामान्य रूप में यह सन्देश भगवान् ने हमें दिया है कि इसे हम किसी भी समय में किसी को भी मुख्य बनाकर उसका प्रतिपादक मान सकते हैं। सीधे-सादे शब्दों में मन्त्र का अर्थ यह है उस तुझे जागरूक विपन्यु विप्र प्रदीप्त करते हैं जो तू अमर्त्य है, हव्यवाह हैं और सहोवृध है। यह सामान्य सन्देष विद्वान्, आत्मा, परमात्मा, भौतिक अग्नि किसी को भी लेकर कहा जा सकता है। इसलिए कहा गया कि वेद मन्त्र का कोई एक निश्चित अर्थ नहीं हुआ करता अपितु एक ऐसा सामान्य अर्थ होता है जो बीज रूप होता है और जिसका विस्तार किसी भी रूप में किया जा सकता है।

१. तम्—संस्कृत में तत् शब्द परोक्ष अर्थ का प्रतिपादक है। परोक्ष यानी जो केवल आंखों से ही नहीं बल्कि किसी भी इद्रिय से अतीत हो, परे हो अर्थात् जिसका अनुभव सामान्य रूप में हम न कर पाते हों। दूसरे शब्दों में ऐसी परोक्ष वस्तु के साथ कोई निकट का सम्बन्ध किसी का होना सम्भव नहीं है। हिन्दी में भी हम किसी व्यक्ति को अन्य पुरुष यानी 'वह' कहकर सम्बोधित करते हैं, उसका अर्थ यही होता है कि या तो वह उस समय हमारे लिए प्रत्यक्ष नहीं है अथवा उसके प्रति उदासीनता है, वह निकटता नहीं है। परमात्मा को जो लोग इस परोक्ष रूप में अन्य पुरुष के रूप में देखते हैं उनमें भक्ति हो सकती है परन्तु उस भक्ति में इतनी तीव्रता नहीं होगी जो कि होनी चाहिए।

२. त्वा —वेद ने कहा यदि तुम परमात्मा से निकटता प्राप्त करना चाहते हो तो उस शक्ति को जिसे तुम अन्य रूप में अनुभव करते हो, प्रयत्न करो कि वह परोक्ष शक्ति तुम्हारे लिए 'त्वा' के रूप में अर्थात् प्रत्यक्ष उपस्थित हो जाए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कर ले लिया करते हैं। यही कारण है कि जब विवेकी, धैर्यवान, सन्तोषी परमात्म-भक्त व्यक्ति को बड़े से बड़े कष्ट और दुःख में भी सुख की जलती हुई ज्योति का ज्ञान हुआ करता है, वैसा ज्ञान सामान्य व्यक्ति को नहीं हुआ करता। यदि हम हमेशा जागृति रहें, सावधान रहें, विवेकशील बनें और जिस प्रकार अग्नि हमेशा जाज्वल्यमान रहती है उसी प्रकार हम भी जाज्वल्यमान बने रहें तो हमें संसार में चाहे सुख मिले, चाहे दुःख मिले, हर क्षण में उस परम पिता परमात्मा के वात्सल्यमय हाथ का, उसकी परम शक्ति, उसकी कृपा और दया का अनुभव होगा और इसी बात को अनुभव करना ही तो परमात्मा का दर्शन है।

६. **समिन्धते**— वेद ने कहा कि उसके दर्शन का अर्थ है उसकी ज्योति को प्रदीप्त करना। जैसे हम यज्ञ में दीप प्रज्वलित करके उससे अग्नि को प्रज्वलित करते हैं उसी प्रकार पहले हम अपने मन में परमात्मा की ज्योति को प्रज्वलित करें या उसके अस्तित्व श्रद्धा और विश्वास लायें उससे हमारी आत्मा रूप यज्ञ की अग्नि का भी स्वयमेव प्रदीपन होता चला जाएगा। जिस प्रकार अरणी में अग्नि का वास है परन्तु वह प्रत्यक्ष तब तक नहीं होता जब तक कि उसको प्रदीप्त न किया जाए, इसी प्रकार इस आत्मा के साथ भी परमात्मा का हमेशा वास है परन्तु उसकी साक्षात अनुभूति तभी हो सकती है जबकि उसको प्रदीप्त किया जाए।

७. **हाव्यवाहम्**—वह परमात्मा जिसका विद्वान् लोग दर्शन करते हैं, हमारे हर प्रकार की स्तुति को, हमारे हर समर्पण को स्वीकार करता है। श्रद्धा से हम जो भी कुछ उसके चरणों में अर्पण करेंगे वह उसे स्वीकार करेगा।

८. **अमर्त्यम्**—मनुष्य शरीरी है। जब तक उसके साथ शरीर का सम्बन्ध है, जन्म और मृत्यु उसके साथ लगे रहते हैं और जिस समय आत्मा इस शरीर से मुक्त होकर अपने कारण शरीर के रूप में रह जाता है, उसे जन्म और मृत्यु कुछ भी नहीं सताती। परमात्मा अशरीरी है इसलिए अमृत है, अमर है और देवस्वरूप है।

९. **सहोवृधम्**—जो व्यक्ति परमात्मा को इस प्रकार अपने मन में प्रदीप्त कर लिया करते हैं उसकी निकटता तथा प्रत्यक्ष अनुभूति किया करते हैं जो वास्तव में उसके प्रति श्रद्धा और भक्ति रखा करते हैं, परमात्मा उनको ऐसा बना देता है कि वे सदा अपने जीवन संग्राम में विजयी होते हैं। जो भी कार्य अपने हाथ में लेते हैं उसमें सफल होते हैं। जब भी वे अपनी इन्द्रियों का दमन करना चाहते हैं, अपने आपको अधीन करना चाहते हैं, करने में समर्थ हो जाते हैं और धैर्यशील रहकर संसार के कड़े से कड़े विरोध और प्रतिरोध का भी सामना करते चले जाते हैं और उनकी शक्ति इतनी तीव्र हो जाती है कि बड़े से बड़े दुःख और कष्टों को भी सरलता से, हंसते हुए, मुस्कराते हुए, झेलते चले जाते हैं और अन्त में वे विजयी होकर ही रहते हैं। परमात्मा उनकी सहन-शक्ति को, उनके धैर्य को बढ़ा दिया करते हैं।

यदि हम परमात्मा के दर्शन करना चाहते हैं, उनकी प्रत्यक्ष अनुभूति करना चाहते हैं और चाहते हैं कि हमें शान्ति प्राप्त हो, हम विजयी बनें, हमारी सब कामनाएं पूर्ण हों, हमें जीवन में हर दिशा में हर काम में सफलता मिले, हम श्रेष्ठतम बनें तो हमें उस परम पिता का स्नेह और वात्सल्य प्राप्त करना होगा उसका हमें सच्चा पुत्र बनना होगा और ऐसा बनने के लिए हमें विपन्यु और जागरूक बनना होगा, विप्र बनना होगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दिल्ली में आर्य समाज की रचनात्मक गति विधियों के केन्द्र बिन्दु, युवक वर्ग में वैदिक विचारधारा प्रसार के लिए यत्न-शील, सच्चे और कर्मठ आर्य···

आर्य समाज दीवान हाल दिल्ली के उत्साही मंत्री श्री पुरुषोत्तमदेव जी

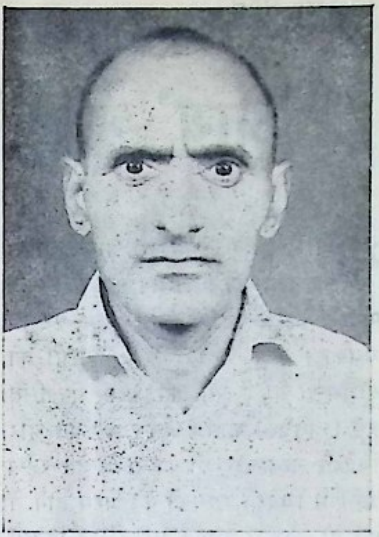

तमिल भाषी होते हुए भी हिन्दी संस्कृत और वैदिक विचारधारा प्रसार के लिए कृतसंकल्प वेदों के विद्वान, प्रभावशाली वक्ता लेखक और कवि

श्री पं० सत्यपाल शर्मा

(एम० ए० वेद शिरोमणि)

आप का स्नेह और आशीर्वाद आरम्भ से ही जन-ज्ञान को प्राप्त है, इसी अंक से आप द्वारा लिखित वेद व्याख्या "मंत्र मुक्ताहार" लेखमाला जन-ज्ञान का विशेष आकर्षण होगा।

—संपादक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

'आर्य' और 'द्रविड़' शब्द

भारत में फूट के लिए सबसे अधिक उत्तरदाता विदेशी शासन था। हमारी फूट के कारण विदेशी-शासन हम पर आ धमका। देश के जागरूक नेताओं की बुद्धिमत्ता से एकता की आग प्रज्वलित हुई। विदेशी शासक आग में ईंधन और विदेशी अत्याचार घी का काम देते रहे। अन्त में विदेशी शासकों को भस्म होने से पूर्व ही भागना पड़ा। परन्तु अब विदेशी फूट डालने वालों का स्थान स्वदेशी स्वार्थियों ने ले लिया।

हिन्दी के परम समर्थक तथा कम्यूनिस्टों के परम शत्रु राजगोपालाचारी, अंग्रेजी के गिरते हुए दासतामय भवन के सबसे बड़े स्तम्भ बन गए। जो प्रोफेसर अंग्रेजी इतिहासकारों के आसनों पर आसीन हुए, वही आर्य तथा द्रविड़ शब्दों के अनर्गल अर्थों के प्रयोग को भारत की छोटी से छोटी पाठशाला तक पहुँचाने में सबसे बड़े सहायक बन गए।

मैं दोनों भुजा उठाकर इस अनर्थ के विरुद्ध शंखनाद करना चाहता हूँ। मेरा कहना है कि 'सारे संस्कृत साहित्य में एक पंक्ति भी ऐसी नहीं जिससे आर्य नाम की नस्ल (Race) का अर्थ निकलता हो। इस शब्द का सम्बन्ध (१) या तो चरित्र से है (२) या भाषा से (३) या उस भाषा को बोलने वाले लोगों से (४) या उस देश से जहाँ इस प्रकार के चरित्र और भाषा वाले मनुष्य बसते हैं परन्तु किसी गोरे रंग वाली अथवा लम्बी नाक वाली जाति से इस शब्द का कोई दूर का भी सम्बन्ध नहीं।

इसी प्रकार द्रविड़ शब्द ब्राह्मणों के दश कुलों में से पांच कुलों में होता है जिनमें शंकराचार्य जैसे ब्राह्मण पैदा हुए।

अथवा मनुस्मृति के उपलभ्यमान संस्करण के अनुसार द्रविड़ उन क्षत्रिय जातियों में से एक हैं जो "आचारस्य वर्जनात् अथवा ब्राह्मणानामदर्शनात् वृषलत्वम् गताः।" क्षत्रियोचित आचार छोड़ देने तथा ब्राह्मणों के साथ सम्पर्क नष्ट हो जाने के कारण शूद्र कहलाने लगे। किन्तु काले रंग तथा चिपटी नाक का द्रविड़ शब्द से कोई दूर का भी सम्बन्ध नहीं।

आर्य और द्रविड़ शब्द

मैक्डानल की वैदिक रीडर में जो कि आज भारत के सब ही विश्वविद्यालयों तथा महाविद्यालयों में पढ़ाई जाती है लिखा है :—

"The historical data of the hymns show that the Indo-Aryans were still engaged in war with the aborigines, many victories over these foes being mentioned. That they were still

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

moving forward as conquerers is indicated by references to rivers as obstacles to advances."

"They were concious of religious and racial unity, contrasting the aborigines-with themselves by calling them non-sacreficers, and unbelievers, as well as 'black skin's and the 'Dasa-colour' as opposed to the Aryan colour.

"ऋग्वेद की ऋचाओं से प्राप्य ऐतिहासिक सामग्री यह दिखाती है कि, इण्डो-आर्यन् लोग सिन्धु पार करके फिर भी भारत के आदिवासियों के साथ युद्ध में लगे हुए थे। इन शत्रुओं पर उनकी कई विजयों का ऋग्वेद में वर्णन है, अभी भी विजेता के दल आगे बढ़ रहे थे। यह इस बात से सूचित होता है कि वे कई स्थानों पर नदियों का अपने अभि-प्रयाण के मार्ग में बाधा के रूप में वर्णन करते हैं।"

"उन्हें यह अनुभव था कि उनमें जातिगत तथा धार्मिक एकता है। वे आदिवासियों को अपनी तुलना में यज्ञहीन, विश्वासहीन, काली चमड़ी वाले, दास रंग वाले तथा अपने आपको आर्य रंग वाले कहते हैं।

यह सारा का सारा ही आद्योपान्त अनर्गल प्रलाप है। सारे ऋग्वेद में कोई मनुष्य एक शब्द भी ऐसा दिखा सकता है क्या जिससे यह सिद्ध होता हो कि काली चमड़ी वाले आदिवासी थे और आर्य रंग वाले किसी और देश के निवासी थे।

प्रथम तो वेद में काली चमड़ी वाले (कृष्णत्वचः) यह शब्द ही कहीं उपलब्ध नहीं और ना ही कहीं गौरत्वः ऐसा शब्द है।

फिर गौरत्वचः बाहर से आये तथा कृष्णत्वचः आदिवासी थे इसका तो प्रश्न ही क्या ?

हां, 'दास वर्णम्' यह दो शब्द हैं जिनकी दुर्गति करके काले-गोरे दो दल कल्पना किये गए हैं। हालांकि चारों वेदों में, विशेष कर ऋग्वेद में कोई एक पंक्ति भी ऐसी नहीं है जिससे यह सिद्ध होता हो कि 'आर्यम् वर्णम्' इस देश में बाहिर से आए, और 'दासं वर्णम्' यहाँ के मूल निवासी (Aborigines) थे।

यदि इनके युद्ध का वर्णन है तो वह युद्ध क्या एक ही देश के रहने वाले दो दलों में नहीं हो सकता, इन दोनों दलों में से एक दल बाहिर से आया था और दूसरा आदिवासी दल था इस कल्पना का एक ही और केवलमात्र एक उद्देश्य था, भारत में पग-पग पर फूट फैलाने वाले तथा भारत के एकता के परम शत्रु अंग्रेजी

भारत की शिक्षा आज भी विदेशी विद्वानों की कूटनीति के शिकंजे में सिसक रही है। नन्हें-नादान बच्चों को हम अपने हाथों विष पिला रहे हैं। मृत्यु को स्वयं निमंत्रण देकर हमने अपने सर्वनाश का सामान जुटाया है····· ·····इस सर्वनाशिनी की जड़ों में मट्ठा डालने के लिए दृढ़प्रतिज्ञ आर्य संन्यासी की लेखनी से लिखित लेख पढ़कर भी क्या आपके नेत्र खुलेंगे·····

—संपादक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शासकों की तथा वैदिक धर्म द्रोही पादरियों की दुष्टता। अब अंग्रेज शासक चले गए।

क्या अब भी हमारे देशवासियों की आँखें खुलेंगी ?

अब जरा आर्यवर्ण तथा दासवर्ण

इन शब्दों की परीक्षा करलें

वर्ण शब्द का अर्थ इस प्रसंग में Colour है ही नहीं।

धातु-पाठ में रंग-वाची वर्ण शब्द के लिए वर्ण धातु पृथक् दी गई है परन्तु निरुक्तकार ने इस वर्ण शब्द की व्युत्पत्ति वृधातु से बताई है। वर्णो वृणोतेः (निरुक्त)

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, यह तीन आर्य वर्ण हैं, क्योंकि

सत्य द्वारा असत्य नाश
बल द्वारा अन्याय का नाश
धन द्वारा दरिद्रय का नाश
] यह तीन व्रत हैं।

इनमें से जो एक व्रत का वरण अर्थात् चुनाव कर लेता है उसके 'वणिक' का जीवन अपने वर्ण की मर्यादानुसार अत्यधिक कठोर नाप-तोल में बंध जाता है इसलिए यह व्रत आर्य-वर्ण कहलाता है।

जो अपने आप को सब प्रकार की शक्तियों से क्षीण पाता है परन्तु स्वेच्छा पूर्वक ईर्ष्यारहित होकर लोक कल्याणार्थ किसी व्रत वाले की सेवा का व्रत ले लेता है यह दास वर्ण का कहलाता है इसलिए शूद्रों के दासान्त नाम कहे हैं। जो व्रतहीन हैं वह दास नहीं, दस्यु हैं।

उन्हें अव्रताः कह कर व्रत वाले उनसे युद्ध करें यह बिलकुल उचित ही है। यह व्रतधारियों का व्रत हीनों से हरामखोरों का श्रम-शीलों से संग्राम सदा से चला आया है और सदा रहेगा। यह दोनों ही सदा से धरती पर रहे हैं इसलिए दोनों ही धरती के आदिवासी, मध्यवासी, तथा अन्तवासी हैं।

अस्तु Aborigines की यह कल्पना बिलकुल निराधार है। इसका वैदिक वाङ्मय तो क्या सारे संस्कृत साहित्य में वर्णन नहीं।

अब देखना है कि "आर्य" शब्द यदि जाति विशेष का वाचक नहीं तो यह किसका वाचक है।

इसके लिए इसकी व्युत्पत्ति को देखना चाहिये।

यह शब्द 'ऋ गतौ' (Ri to move) इस धातु से बना है।

परन्तु ऋ धातु का अर्थ गति है इतना तो व्याकरण से ज्ञान हो गया।

अब निरुक्त प्रक्रिया से देखना चाहिए कि ऋ धातु का अर्थ किस प्रकार की गति है।

इसके लिए दो शब्दों को ले लीजिते। एक ऋतु, दूसरा ऋत,

ऋतु का अर्थ है परिमित समय।

ग्रीष्म ऋतु=गरमी के लिये नियत, नपा हुआ समय,

शरद ऋतु=जिसमें सरदी पड़े वह नपा हुआ समय,

वर्षा ऋतु=जिसमें वर्षा होती है वह नपा हुआ समय,

वसन्त ऋतु=जिसमें सरदी से धुन्ध कोहरा आदि आकाश के आच्छादक वृत्रों का अन्त हो और समशीतोष्ण अवस्था हो वह नपा हुआ समय,

इस प्रकार 'ऋ गतौ' का अर्थ हुआ ऋ=मितगतौ अर्थात् नाप के साथ चलना।

इसीलिये जो पदार्थ जैसा है उसके सम्बन्ध में अन्यूननातिक्त, ठीक नपा-तुला ज्ञान कहलाता है=ऋत इसके विपरीत अन् + ऋत

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अब इसका बिलकुल सन्देह नाशक प्रमाण लीजिये

अर्वन्तोमित द्रवः (यजु-९,)

वे घोड़े जो इतने सधे हों कि दौड़ते समय भी उनके पग नाप तोल के साथ उठें, परिमित हों ठीक नपे तुले हों वे अर्वन्तः कहलाते हैं।

इसी ऋधातु से 'आर्य' शब्द बना है।

इस शब्द के सम्बन्ध में पाणिनि का सूत्र है 'अर्यः स्वामि वैश्ययोः' आर्य शब्द के दो अर्थ हैं एक स्वामी दूसरा वैश्य।

इस पर योरोपियन विद्वानों की बाल-लीला देखिये।

उनका कहना हैं यह शब्द ऋधातु से बना है जिसका अर्थ है खेती करना।

यह 'ऋकृषौ'

धातु उन्होंने कहां से ढूंढ निकाली, यह अकाण्ड ताण्डव भी देखिए।

आर्य का अर्थ है स्वामी अथवा वैश्य

वैश्य के तीन कर्म हैं

(१) कृषि
(२) गोपालन
(३) वाणिज्य।

सो क्योंकि आर्य का अर्थ है वैश्य और वैश्य का कर्म है कृषि इसलिए ऋधातु का अर्थ है खेती करना।

बलिहारी है इस सीनाजोरी की,

क्यों जी, वैश्य के तीन कर्मों में से व्यापार और गोपालन को छोड़कर आपने खेती को ही क्यों चुना ?

इसका कारण उनसे ही सुनिये।

अंग्रेजी भाषा में एक शब्द है Arrable Land अर्थात् कृषि-योग्य भूमि। यह शब्द जिस भाषा से आया है उसका अर्थ खेती करना है इसलिए संस्कृत की ऋधातु का अर्थ खेती करना सिद्ध हुआ, क्योंकि हिन्दी में लुकना अर्थ छिप जाना है इसलिए Look at this room का अर्थ हुआ, इस घर में छिप जाओ, क्योंकि हिन्दी भाषा में धी का अर्थ बेटी है इसलिए वेद में भी धी का अर्थ बेटी हुआ।

सुनिए लाल बुझक्कड़ जी

वह अर्थ जो

(१) स्वामी
(२) कृषि
(३) गोपालन
(४) व्यापार

इन चारों में समान है, वह है नाप-तोल के साथ व्यवहार, स्वामी से भृत्य जो वेतन पाता है वह नाप तोल के बल पर पाता है।

'खेती के योग्य भूमि को नापना पड़ता है क्योंकि उस पर लगान लगता है, इसीलिये अंग्रेजी में भी कृषि योग्य भूमि Arrable Land कहलाती है।

गोपालन करनेवाला दूध नापता है क्योंकि उस पर उसकी अजीविका निर्भर है।

व्यापारी के नाप-तोल का तो प्रश्न ही नहीं उठता वहाँ तो सारा काम ही नाप तोल का है। वैश्य हलवाई से कहिए लाला जी लड्डू खाने हैं तुरन्त आपका स्वागत करके आपको आसन पर बैठायेगा और अति मधुरता पूर्वक पूछेगा कितने तोलूं, यह 'कितने' वैश्य कर्म का आधार है, इसलिए स्वामी और वैश्य दोनों अर्थ कहलाते हैं।

स्वामियों का स्वामी परमेश्वर है,

आर्य का अर्थ है ईश्वर का पुत्र अर्थात स्वामी का पुत्र, अर्थात् परमेश्वर का पुत्र।

परमेश्वर का गुण है न्यायपूर्वक नियमानुसार नाप-तोल कर कर्मों का फल

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

देना।

जो मनुष्य इसी प्रकार सबके साथ प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य व्यवहार करता है वही भगवान् के गुणों को धारण करने के कारण उसका सच्चा सपूत है। परमात्मा का इकलौता बेटा कोई नहीं। सृष्टि के आदि से आज तक जिन्होंने नाप-तोल युक्त व्यवहार किया वे आर्य कहलाए और जो करेंगे वे कहलाएंगे चाहे किसी देश जाति अथवा सम्प्रदाय में उत्पन्न हुए हैं। यह है आर्य शब्द का अर्थ। जिनका जीवन सत्य रक्षा, न्यायरक्षा अथवा धनहीन-रक्षा के व्रतों से नपा-तुला हो वे आर्य वर्ण के लोग कहलाएंगे और उनका चुनाव किया हुआ व्रत आर्य वर्ण कहलाएगा।

अब बताइए, कि इसमें गोरा रंग लम्बी नाक अथवा भारत के बाहर के किसी देश से आना किस प्रकार आघुसा, जिन धूर्त्त शिरोमणि लोगों ने इस राष्ट्र की एकता के विध्वंस के लिए इस पवित्र शब्द की यह दुर्दशा की है उनसे पग-पग पर प्रति-क्षण लड़ना और तब तक, दम न लेना जब तक यह अविद्यान्धकार धरती से विदा न हो हर सत्यप्रेमी का परम कर्त्तव्य है, और राष्ट्रहितैषियों के लिए तो यह जीवन मरण का प्रश्न है। क्योंकि इसी पर राष्ट्र की एकता निर्भर है।

माता गांधारी का आशीर्वाद

—साधु सोमतीर्थ

जब दुर्योधन युद्ध के लिये कुरुक्षेत्र के रणांगन की ओर प्रस्थान करने लगा, तब उसने जाकर अपनी माता गान्धारी की चरण-वन्दना की और उससे अपनी विजय का आशीर्वाद मांगा। माता गंधारी एक आस्तिक, धार्मिक, विदुषी, न्यायप्रिय, पतिव्रता आर्य-महिला थी। अपने अन्धे पति राजा धृतराष्ट्र का अनुगमन करने के लिये वह अपनी आंखों पर पट्टी बान्धे रहती थी। मांगने पर यह आवश्यक ही था कि वह अपने पुत्र को आशीर्वाद दे। अपने पुत्र के पक्ष की दुर्बलता को तो वह जानती ही थी, अतः पुत्र-मोह में वह न फंसी। पक्षपात उसने नहीं किया। मिथ्या वा अन्याय-संगत आशीर्वाद देना उचित न था। बोली:—

"बेटा! यदि तू सत्मार्ग पर चल रहा हो, तो विजय तेरी ही हो। यही मेरी कामना है, यही मेरा आशीर्वाद।"

कोई सच्चा आस्तिक भगवान् से यह प्रार्थना न करेगा कि मुझे विजय प्रदान कर। वह तो कहेगा—"हे प्रभो! यदि मेरा पक्ष सत्य है, तो मुझे विजय प्रदान कर, वह अपनी इच्छा या पसन्द को ईश्वर के ऊपर लादेगा नहीं। वह तो ईश्वर की इच्छा और व्यवस्था के आधीन होकर ही चलेगा। असत्य पक्ष को वह अपनायेगा ही नहीं। यदि भूल, भ्रान्ति वा प्रलोभन वश कभी अपनायेगा भी तो विजय की कामना न करेगा। वह तो पराजय की ही कामना करेगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भारत की सर्वश्रेष्ठ आर्य संस्था

आर्य कन्या महाविद्यालय बड़ौदा

आर्य जनता को सुविदित ही है कि आर्य कन्या महाविद्यालय बड़ौदा आर्य समाज की सर्व श्रेष्ठ शिक्षण संस्था है। इसमें ४०० के लगभग कन्याएं वैदिक धर्म की शिक्षा पा रही हैं। अधिकांश छात्राएं तो विदेशों की हैं।

इन छात्राओं के निवास के लिए कमरों की अत्यन्त आवश्यकता है। अतः उदार दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि वे अपने किसी भी प्रिय जन की स्मृति में कमरा बनवाकर सहयोग प्रदान करें। एक कमरे पर ५०००) व्यय आता है। निर्धन छात्राओं के लिए छात्रवृत्ति देने की भी प्रार्थना है।

विनीता

आचार्या

आर्य कन्या महाविद्यालय करोल बाग बड़ौदा

जन-ज्ञान के सदस्यों से!

कच्छ और गुजरात क्षेत्र में शुद्धि व वैदिक धर्म प्रचार के महत्वपूर्ण कार्यों में व्यस्त रहने के कारण मैं 'जन-ज्ञान' के सम्पादन कार्य हेतु अधिक समय नहीं दे पा रहा। मुझे विश्वास है कि पाठक गण जन-ज्ञान को, अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करते रहेंगे। मेरी शुभ कामनाएं तो इसके साथ रहेंगी ही। गत ६ मास में जो भी सहयोग मिला उसके लिए मैं सभी का आभारी हूँ।

भगवानदेव शर्मा

संचालक महर्षि दयानन्द योग आश्रम टंकारा (गुजरात)

आर्य समाज की विचारधारा फैलाने के लिए आज ही ६) भेजकर 'जन-ज्ञान' के सदस्य बनिए।

निःसंतान परिवारों के लिए

विवाह के बाद यदि आप अब भी संतानहीन हैं तो आप आज ही मिलें या लिखें। तीन मास के कोर्स का मूल्य १००) संतान होने पर १००) और भेंट करने होंगे।

श्यामसुन्दर 'स्नातक'
आयुर्वेदालंकार आर्य समाज
दीवान हाल दिल्ली

वर चाहिए

आर्य परिवार की कन्या के लिए उपार्जनशील २५ वर्षीय आर्य वर चाहिए पूर्ण विवरण सहित लिखें।

c/o ११९३ जन-ज्ञान १५९७
हरध्यान सिंह रोड, नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

संपादकीय

विजय के लिये सहयोग प्रार्थना

देखा आपने, "जन-ज्ञान" का नवम्बर अंक ! पढ़ भी लिया होगा, पता नहीं आप को कैसा लगा। पर हां, भविष्य में मेरा यह यत्न होगा कि "जन-ज्ञान" का प्रत्येक लेख और कविता आपके हृदय में महर्षि के लक्ष्य की पूर्ति का संकल्प भर सके। आपके मस्तिष्क को नया जीवन और वेद प्रसार की प्रेरणा मिले, क्योंकि वैदिक विचार-धारा का प्रसार ही "जन-ज्ञान" का लक्ष्य है।

लक्ष्य पूर्ति आप चाहते हैं, पर हो नहीं पा रही, इसके लिये तो आप को एक बार बिना किसी संकोच के आत्म निरीक्षण कर यह निर्णय करना है कि हमें महर्षि के लक्ष्य से प्यार है या अपने स्वार्थों से ? यह सत्य अच्छी तरह समझ लीजिये कि यदि अपने स्वार्थों की होली आप नहीं जला सकते तो लक्ष्य कभी भी आपके पास नहीं आयेगा। भटकते-भटकते आप मंजिल से दूर जा रहे हैं और इस यात्रा का अंत पता नहीं कहां होगा ?

मैंने इस दिशा में निरन्तर विचार किया है, बहुत सोचा है और मेरे इस विश्वास को कोई डिगा नहीं सकता कि हमारे कार्यकलाप ही हमारे मार्ग की सबसे बड़ी बाधा हैं। घर-आंगन की फुलवारी में ईर्ष्या, द्वेष का विष फैलकर महामारी बन रहा है, जो सपने गुरुदेव दयानन्द ने देखे थे उन्हें कोई देखना नहीं चाहता, उलझनें बढ़ती जा रही हैं, और इस संबन्ध में मुझे अपने पाठकों से बहुत कुछ कहना है, पर आज नहीं ।

अभी तो मैंने संपादन संभाला ही है। यत्न होगा कि आप मेरे साथ सहयोग करें। "जन-ज्ञान" को आरम्भ करते हुए जो सपने इसने देखे उन्हें मूर्त रूप देने के लिये मुझे भी जब यह गुरुतर भार संभालने का आदेश मिला तो अस्वीकार करना कठिन था। सफलता मिलेगी या नहीं कह नहीं सकती। प्रभु से यही प्रार्थना है कि वह शक्ति दे कि अपने प्राणों की अंतिम सांस तक सत्य-ज्ञान-वेद की विमल ज्योति प्रसारित करती रह सकूं।

बन्धु गण ! सर्वनाश तो द्वार पर बिन बुलाये मेहमान सा खड़ा है। यह तो युद्ध की वेला है। हमें संघर्ष करना है आसुरी दलों से, विजय भी प्राप्त करनी ही है—

एक बहन के नाते मेरा आमन्त्रण वैदिकधर्म प्रचार में सहयोग का आप सभी स्वीकार करेंगे, इसी आशा के साथ कार्य संभाला है।

—राकेश रानी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धन्यवाद ! सहयोग के लिए !

'जन-ज्ञान' के जन्म को ६ मास भी नहीं हुए कि आर्य जनता का स्नेह और आशीर्वाद उदारता पूर्वक उसे प्राप्त होने लगा। जिस गति से अयाचित सहयोग हमें प्राप्त हो रहा हैं उस के लिए हम हृदय से सभी के प्रति कृतज्ञ हैं।

हमारा यह विश्वास अब और भी अधिक सुदृढ़ हो गया है कि अति शीघ्र निकट भविष्य में 'जन-ज्ञान' प्रत्येक आर्य के गौरव का कारण बनेगा। सस्ता–आकर्षक प्रभावपूर्ण वैदिक साहित्य निर्माण का हमारा संकल्प प्रभु पूर्ण करेंगे। वस्तुतः जन मानस का स्नेह और परम पिता परमात्मा का विश्वास ही हमारी पूंजी है। प्रभु कृपा करें कि हमें स्नेह भी मिलता रहे और विश्वास का दीप भी जलता रहे।

	गत अङ्क तक प्रकाशन हेतु.....	प्राप्त धन १०८)
८.	श्री एस० आर० आनन्द, दिल्ली	१०००)
९.	ला० दीवान चन्द जी, दिल्ली	२५०)
१०.	गुप्त दान	३१)
११.	आर्य समाज साउथ एक्सटेंशन, दिल्ली	१०१)
१२.	श्री शालिग्राम जी, दिल्ली	५)
१३.	श्री तिलक शर्मा, दिल्ली	५)
१४.	श्री कर्मचन्द भसीन, लखनऊ	५१)
१५.	श्री राम प्रकाश जी, नई दिल्ली	११)
१६.	श्रीमती भारद्वाज, दिल्ली	१५१)
१७.	श्रीमती रतन देवी बहल, दिल्ली	२२१)
१८.	श्री चेतनानन्द विद्यार्थी, दिल्ली	१०१)
१९.	श्री मनोहर लाल जी गजबसोर्दी	२५)
		२८५३)

यह सहयोग वस्तुतः उस महान् लक्ष्य के लिए हैं जिस की सिद्धि के लिए हम अपनी पूर्ण शक्ति से लगे हैं। दीपावली अंक और श्रद्धांजलि अंक दोनों का सर्वत्र अभूतपूर्व स्वागत हुआ। ट्रैक्टों का प्रकाशन भी आरंभ हो चुका है। महर्षि दयानन्द का जीवन-चरित्र और अंग्रेजी सत्संग पद्धति भी हम शीघ्र ही आर्य जगत की सेवा में भेंट कर रहे हैं।

प्रभु कृपा करें, हमें प्रकाश दें ताकि हम अन्धकार में भटकती मानव जाति को जीवन के मार्ग पर चलाने हेतु सत्य–वेद–ज्ञान–ज्योति का प्रकाश सर्वत्र प्रसारित कर सकें..... ....

विनीता :
राकेश रानी

जन-ज्ञान-प्रकाशन, १५९७, हरध्यान सिंह रोड, नई दिल्ली–५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

'जन-ज्ञान मासिक'
१५६७, हरध्यान सिंह रोड,
नई दिल्ली-५

नवम्बर १९६८

Regd. No.
D. 1631

अपने नेत्रों को सदा स्वस्थ बनाये रखने के लिये प्रतिदिन नाग ज्योति प्रयोग करने की आदत डालिये।

नाग ज्योति आखों को नीरोग बनाता है। इसके प्रतिदिन व्यवहार करने से आखों की जलन, सुर्खी, सूजन, गुहाजनी, पानी बहना, आंखों का चिपकना आदि रोग दूर होते हैं।

नेत्रों की रक्षा के लिये

नाग ज्योति प्रयोग करें

मुरारी ब्रदर्स
कमला नगर, दिल्ली-७

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi